Postal Registration No. CHD/0107/2024-2026 Posted at MBU Chandigarh RNI No. CHABIL/2000/3469

हिन्दी/अंग्रेजी मासिक पत्रिका

जाट लहर

जाट सभा, चण्डीगढ़ के सौजन्य से प्रकाशित

दीन बन्धु सर छोटूराम

वर्ष 25 अंक 10 30 अक्तूबर, 2025 मूल्य 5 रुपये

प्रधान की कलम से

नारी शिक्षा एवं समाज सुधार के सुत्राधार अमर शहीद भक्त फूल सिंह

डा. महेन्द्र सिंह मलिक

अविभाजित पंजाब विशेषकर हरियाणा में महिला शिक्षा के प्रारम्भ व विस्तार में भक्त फूल सिंह की अहम भूमिका रही है। उनका जन्म जिला सोनीपत के ग्राम माहरा में 06 अगस्त, 1885 को एक साधारण किसान परिवार में हुआ। बाल्यकाल से ही उनमें सेवा भाव, सरलता, सदाचार और निर्भिकता के गुण विद्यमान थे। उन्होंने स्त्री शिक्षा के क्षेत्र में अभूतपूर्व योगदान दिया। उनका यह मानना था कि यदि सुशिक्षित व उच्च संस्कारों वाली मातायें समाज को मिलेगी तो आने वाली पीढ़ियों के लिये एक बेहतर व समृद्ध जीवन का निर्माण सम्भव हो सकेगा। अतः वर्ष 1919 में गुरुकुल भैंसवाल की स्थापना की जिसकी आधारशिला श्रद्धानन्द जी ने रखी। इस के बाद सन 1936 में खानपुर कलां गांव के वीरान क्षेत्र में मात्र तीन लड़कियों से आर्य कन्या गुरूकुल की शुरूआत की। आज इस गुरूकुल में कन्या डिग्री कॉलेज, महिला पॉलिटीकल कॉलेज, आयुर्वेदिक कॉलेज, बी.एंड कॉलेज आदि शिक्षा संस्थान चलाये जा रहे है और वर्तमान में प्रदेश सरकार द्वारा इस संस्थान में भक्त फूल सिंह महिला विश्व विद्यालय की स्थापना की गई।

स्त्री शिक्षा के प्रसार के साथ–साथ भगत फूल सिंह जीवन प्रयंत समाज सुधार/कल्याण के कार्यों में बढ़चढ़ कर भाग लेते रहे और सदैव आर्य समाज व स्वामी दयानन्द की नीतियों के प्रचारक रहे। अतः परोपकार व समाज सेवा के लिये पटवारी की नौकरी से त्यागपत्र दे दिया और पंचायत बुलाकर क्षमा मांगकर लोगों से ली गई रिश्वत की सारी रकम अपनी पैतृक सम्पति तक बेंच कर वापस लौटा दी थी जो की ईमानदारी व समाज सेवा की अनौखी मिसाल है। सामाजिक उत्थान व स्त्री शिक्षा के प्रसार के लिये उन्हें देहाती गांधी की संज्ञा भी दी गई।

सन् 1916 में गांव समालखा जिला करनाल में विरोध करके जिला प्रशासन से गौ हत्थे को बंद करवाया। सन् 1937–38 में लाहौर में पचास लाख रुपये से पंजाब गवर्नमेंट द्वारा खुलने वाले कसाईखाना बन्द करवाया। हैदराबाद रियासत के आर्य सत्यग्रह में 700 सत्यग्राही हैदराबाद भेंजे। भक्त जी ने विवाह आदि अवसरों पर फिजूलखर्ची को रोकने के लिए सन् 1925 में ग्राम गांधरा (जि० रोहतक) में हरयाणा प्रांत की सब खापों की एक बड़ी भारी पंचायत बुलवाई। जिसमें बहुत से उपयोगी प्रस्ताव पास करवाये। सन् 1928 ई० में भक्त जी को यह पता चला कि होडल और पलवल के कुछ मूले जाट पुनः शुद्ध होना चाहते हैं तो वहां पहुंच गये। इस शुद्धि के उपरान्त बेटी और रोटी के सम्बन्ध में जाटों की एक पंचायत बुलाई। इस काम में एक जेलदार बाधा डालता रहा, जेलदार को उचित मार्ग पर लाने के लिए आपने ग्यारह दिन तक उपवास रखा। अन्त में चौ० छोटूराम के आश्वासन पर आपने अपना अनशन व्रत समाप्त किया। सन् 1929 के जून में आपने रायपुर ग्राम के केहरी सिंह नामक एक मूले जाट को शुद्ध करके वैदिक धर्मी बनाया। श्री हरद्वारी सिंह ने अपनी लड़की का विवाह केहरी सिंह से कर दिया। इस विवाह में भात्ती बनने का कार्य भक्त फूल सिंह जी ने किया। 31 जनवरी 1939 से 17 अगस्त 1939 तक हैदराबाद सत्याग्रह में हरियाणा के आर्य समाजियों ने आपके नेतृत्व में अपना अमिट योगदान दिया। सन् 1941 ई० में आर्यसमाज के उत्सव पर भक्त फूल सिंह जी, स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी के साथ लोहारू पहुंचे। आर्यसमाज के जलूस पर मुसलमानों ने आक्रमण कर दिया। इस आक्रमण में भक्त जी को गहरी चोटें आई और वे मूर्च्छित हो गये।

जिला हिसार के मोठ नामक गांव के दलित बंधुओ ने कुआं बनवाना आरम्भ किया। मुसलमानों ने इसका विरोध किया। दलित बंधु निराश होकर भक्त जी के पास आये और अपनी कष्ट भरी गाथा सुनाई। भक्त जी ने उन्हें कुआं बनवाने का आश्वासन दिया और 1 सितबर 1940 को मोठ पहुंच गए। उन्होंने लगातार तीन दिनों तक गाँव के मुसलमानों को समझाया। मुसलमानों पर उनकी बातों का कुछ भी प्रभाव नहीं पडा। भक्त जी ने आमरण अनशन शुरू कर दिया और कहा **'कुआं बनने पर ही अन्नग्रहण करूगा, अन्यथा यहीं प्राण त्याग दूंगा।'** मुसलमानों ने भक्त जी को तीन चार दिन बाद उठा कर जंगल में फेंक दिया। भक्त जी बच गए और पुनः 23 दिन के उपवास के बाद उन्हें अपने कार्य में सफलता मिल गई। कुआं बना और दलित बंधुओं की पानी की समस्या हल हो गई।

शेष पेज–2 पर

शेष पेज–1

विश्व बन्धु महात्मा गांधी जी ने उपरोक्त घटना के विषय में जब सूना तो बहुत प्रसन्न हुए और भक्त जी से मिलने की इच्छा प्रकट की। भक्त जी दिल्ली आये और बापू से लगभग डेढ़ घंटे तक वार्तालाप चला। बापू ने भक्त जी से कहा, आप आर्यसमाज को छोड़कर मेरे कार्यक्रम के अनुसार कार्य कीजिये। समय–समय पर मैं आपको यथाशक्ति मदद देता रहूँगा, इससे आप देश की अधिक सेवा कर सकेंगे। भक्त जी ने निश्छल भाव से कहा– महात्मा जी मैं आपकी सब आज्ञाओं को मानने को तैयार हूँ परन्तु आर्यसमाज को नहीं छोड़ सकता क्योंकि ऋषि दयानंद और आर्यसमाज तो मेरे रोम रोम में समा चुके हैं।

आज तेजी से बदल रहे समाजिक स्वरूप व विखराव के मध्यनजर महान समाजसेवी, नारी शिक्षा के सुत्राधार, उत्कृष्ठ आर्य समाजसेवी प्रचारक भगत फूल सिंह के धर्म–निरपेक्ष, समाजसेवी, सदभावनापूर्ण विचारधारा को अपनाने की नितांत आवश्यकता है। अंत लेखक की अध्यक्षता में जाट सभा चण्डीगढ़, जाट सभा पंचकूला व चौ० छोटूराम सेवा सदन कटरा (जम्मु) द्वारा राष्ट्रपिता महात्मा गांधी व राष्ट्र के पूर्व प्रधानमंत्री स्व० श्री लाल बहादुर शास्त्री जी की जयंती 02 अक्तूबर 2025 के अवसर पर महान समाज सुधारक, नारी शिक्षा के सूत्राधार रहे भगत फूल सिंह की समृति में **"विचार गोष्ठी"** का आयोजन किया गया जिसमें श्रीमति कृष्णा मलिक, पूर्व चेयरपर्सन कन्या गुरुकुल खानपुर कलां व भैंसवाल कलां, चौ० जयसिह ठेकेदार पूर्व महासचिव कन्या गुरुकुल खानपुर कलां व भैंसवाल कलां, बहन साहब कौर सेवानिवृत प्रिंसीपल कन्या गुरुकुल खानपुर कलां, बहन (डॉ०) ज्ञानवती प्रिंसीपल (सेवानिवृत) भगत फूल सिहं महिला डिग्री कॉलेज खानपुर कलां, श्रीमति सुमन दलाल प्रिंसीपल (सेवानिवृत) भगत फूल सिहं एजुकेशन कॉलेज खानपुर कलां, श्रीमति किरण जिन्दल, प्रिंसिपल भगत फूल सिह महिला पोलिटकनिक खानपुर कलां, श्रीमति ब्रहमवति, पूर्व प्रिंसीपल कन्या गुरुकुल सीनियर सैकण्डरी स्कूल कानपुर कलां, अमर शहीद भगत फूल सिहं की दोहती एवं स्व० पदमश्री सुभाषिनी जी की सुपुत्री श्रीमति कमला रानी, श्री रणवीर सिहं राठी, विभाग अध्यक्ष लाईब्रेरी व सूचना विज्ञान भगत फूल सिहं महिला पोलिटकनिक खानपुर कलां, श्री राज सिंह कादयान, भूतपूर्व प्रिंसीपल बी०पी०एस० पोलिटकनिक कॉलेज खानपुर कलां के अतिरिक्त विभिन्न आर्य समाजियों, विभिन्न कन्या गुरूकुल संस्थानों/विद्यापीठों से आये आचार्यों व बुद्धिजीवियों द्वारा आर्य समाज व भगत फूल सिंह के सिद्धान्तों व आर्दशों पर विचार मंथन किया गया। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी व पूर्व प्रधानमंत्री स्व० श्री लाल बहादुर शास्त्री की तर्ज पर भगत फूल सिंह की भी नारी शिक्षा के विकास, ग्राम उत्थान, सदभावना कायम करने, सुरक्षा सैनिको की मान–प्रतिष्ठा व सुदृढ़ राष्ट्रीय सुरक्षा व्यवस्था बनाये रखने की दूरगामी सोच रही है। अतः विचार गोष्ठी के दौरान ध्वनि मत से हरियाणा व केन्द्रिय सरकार से आहवान किया गया कि महान समाज सुधारक भगत फूल सिंह की कन्या गुरूकुल महासभा खानपुर कलां में चेयर स्थापित की जाये ताकि इस गुरूकुल संस्था में शिक्षा ग्रहण कर रहे छात्र उनकी जीवनी व सिद्धान्तों पर शोध कार्य कर सके। भगत फूल सिंह द्वारा स्थापित की गई कन्या गुरूकुल महासभा भैंसवाल कलां का जीर्णोदार करके इसको सरकारी कोष से आधुनिक तकनीकी स्वरूप से तैयार किया जायें क्योंकि सरकार की उपेक्षा व फंड की कमी के कारण यह संस्था बंद होने के कगार पर है। इसके साथ ही सरकारी स्कूलों व सभी गुरूकुल संस्थाओ में प्राईमरी स्तर तक के पाठ्यक्रम में भगत फूल सिंह की जीवनशैली को शामिल किया जाये ताकि युवा पीढ़ी उनके संस्कारों, ज्ञानवर्धक विचारों व समाज सेवी संघर्ष पूर्ण कार्यों से प्रेरणा व मागदर्शन प्राप्त कर सकें।

उस समय कुछ रूढ़िवादी कटरपंथी असामाजिक तत्वों की महान सुधारक भगत फूल सिंह की समाज सेवी निष्पक्ष विचारधारा रास नहीं आई और मुस्लिम समाज के कुछ कुठिंत कटरपंथियों द्वारा 14 अगस्त 1942 को महान आत्मा भगत फूल सिंह की गोली मारकर हत्या कर दी गई। मुत्यु के समय में भी उनके मुख से ओउम ही निकला। ऐसे महान त्यागी, समाज सेवी, कर्मनिष्ठ और शैक्षणिक विभूति को लेखक शत्–शत् नमन करता है।

डॉ० महेन्द्र सिंह मलिक, आई.पी.एस. (सेवा निवृत)
पूर्व पुलिस महा निदेशक हरियाणा,
प्रधान अखिल भारतीय शहीद सम्मान संघर्ष समिति व
जाट सभा, चंडीगढ़ व पंचकूला एवं
चेयरमैन, चौ० छोटूराम सेवा सदन, कटरा, जम्मू

हमारे प्रेरणा स्रोत

– डा. राजेन्द्र कुमार, (मो० 9897821175)

समय–समय पर प्रत्येक समाज में ऐसी महान विभूतियों का आविर्भाव होता है जो अपने सद्कार्यों से समाज का कल्याण तो करते ही हैं, साथ ही भावी पीढ़ियों के लिए कुछ सामाजिक मूल्यों का निर्माण करते हैं, जो उनमें त्याग, जातीय गौरव की भावना और मानव मूल्यों के प्रति आस्था उत्पन्न करने में सहायक होते हैं। इन महान व्यक्तित्वों के कार्य समाज को गौरवान्वित करने के साथ–साथ आने वाली सन्ततियों को प्रेरणा प्रदान करते हैं, उनका मार्गदर्शन करते हैं, और उन्हें कुछ महान कार्य करने के लिए प्रेरित करते हैं। हालांकि ये महापुरुष सम्पूर्ण मानवता के हित धारक होते हैं, उनका अस्तित्व सम्पूर्ण मानवता का पथ–प्रदर्शक होता है किन्तु उनका होना उनके समुदाय विशेष को अपने पूर्वजों, प्रजापालक नृपतियों, समाज–सुधारकों, स्वतंत्रता सेनानियों, शिक्षाविदों के साथ–साथ अपने समाज और अपनी जाति पर गर्व करने का अवसर देता है जिससे अपने समाज के महान व्यक्तियों के बारे में जानने की इच्छा उत्पन्न होती है।

गीता में कहा गया है –

यद्यदाचरति श्रेष्ठस्त्ततदेवेतरो जनाः।
स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदेनवर्तते।।

अर्थात जैसा–जैसा आचरण समाज के श्रेष्ठ लोग करते हैं, उनकी देखादेखी साधारण लोग भी वैसा ही आचरण करते हैं। अपने पुरखों में हम जो–जो अच्छाइयां देखते हैं, हम भी अपने जीवन में वैसा ही बनना चाहते हैं। उन्हीं की तरह आगे बढना और समाज को बढ़ाना चाहते हैं। इससे हमारी सकारात्मक सोच में वृद्धि होती है, समाज के प्रति एक उदात्त बनायें।

इस अक्तूबर महीने में हमारे समाज के कई महत्वपूर्ण व्यक्ति इस धरा पर अवतरित हुए। जिनके जन्मदिन हमें ठीक–ठीक ज्ञात हैं, उनमें पहला नाम भरतपुर नरेश महाराजा कृष्ण सिंह (1899–1929) का आता है। जिस समय महाराजा कृष्ण सिंह का अवतरण हुआ उस समय देश अंग्रेजों का गुलाम था और देश में, खास तौर पर राजस्थान में, ऐसे राजाओं की भीड़ थी जिन्हें इतालवी विचारक गेतानो साल्वमिनी ने **"गिल्डिड आइडलर्स"**, अर्थात स्वर्णजटित निकम्मे नाम दिया था। ये राजा अंग्रेज शासकों के क्रीतदास थे, उनकी सेवा में हाथ बांधे खड़े रहते थे क्योंकि उनकी दया से ही इनका जीवन चलता था। जनता से इनका कुछ लेना–देना नहीं था। लेकिन भरतपुर के राजा इसके अपवाद थे। उन्होंने अफगानों, मुगलों, मराठों और अंग्रेजों से निरन्तर टक्कर ली। भरतपुर सदा अजेय ही बना रहा। 4 अक्तूबर, 1899 को जन्मे महाराज कृष्ण सिंह को 26 अगस्त, 1900 को राजगद्दी पर बिठाया गया। वे चूंकि अल्पवयस्क थे अतः राज्य का प्रबन्ध स्टेट कौंसिल को सौंपा गया। राजमाता गिर्राज कुमारी ने अपने पुत्र के लालन–पालन और उच्च शिक्षा पर पूरा ध्यान दिया। उन्होंने मेयो कॉलेज अजमेर के अलावा इंग्लैण्ड में भी शिक्षा प्राप्त की। वयस्क होने पर 1918 में तत्कालीन वायसराय लार्ड चेम्सफोर्ड ने भरतपुर आकर उन्हें शासन के अधिकार सौंप दिये।

राजकाज संभालते ही महाराज ने सेना का पुनर्गठन किया, सरकारी कामकाज की भाषा उर्दू के स्थान पर हिन्दी कर दी, प्रत्येक नागरिक के लिए प्राथमिक शिक्षा अनिवार्य कर दी और इसके लिए राज्य के खर्च पर स्कूल खोले। 1922 में **"ब्रज–मंडल"** की स्थापना की। समाज–सुधार एक्ट पास किया, क्रेडिट बैंक, सोसायटी की स्थापना की, ग्राम पंचायत एक्ट पारित करके प्रजा को प्रबन्ध अधिकार दिये और कलाकौशल तथा व्यापार में वृद्धि के लिए प्रति वर्ष असौज के महीने में भरतपुर में प्रदर्शनी की नींव डाली। 1924 में आई भयंकर बाढ़ में आपने जनता की अनुकरणीय सेवा की। वे अपने राज्य ही नहीं देश के प्रत्येक हितकर कार्य में भाग लेते थे। महाराज को जाट जाति में जन्म लेने का बहुत अभिमान था। 1925 में पुष्कर में हुए जाट महासभा के प्रसिद्ध अधिवेशन की अध्यक्षता महाराज कृष्ण सिंह ने की थी जिसमें दिया उनका ऐतिहासिक सम्बोधन आज भी याद किया जाता है। उन्होंने अपने व्यय पर भरतपुर में हिन्दी साहित्य सम्मेलन का आयोजन कराया। प्रजा में ज्ञान और जीवन के विकास के लिए उन्होंने **"भारत वीर"** नामक पत्र भी आरम्भ कराया। महाराज प्रजा को शासन में सहयोगी बनाना चाहते थे इसलिए उन्होंने शासन समितियों तथा नगर पालिकाओं की स्थापना की। अंग्रेजी सत्ता को भला ये काम कैसे पसंद आते? 1928 में उन पर अपव्ययी का आरोप लगाकर ब्रिटिश सरकार ने राज्य छोड़ देने पर विवश किया। महाराज ने

मुश्किलें केवल आपकी परीक्षा लेती हैं, हार या जीत का फैसला आपका हौसला करता है।

इसका विरोध किया और न्याय के लिए लड़ना शुरू किया किन्तु ऐसे प्रजा हितैषी, समाज–सुधारक, देशभक्त का अल्पायु में मार्च 1929 में दिल्ली में स्वर्गवास हो गया।

विजयदशमी के दिन ही आर्य–जगत के उध्द्भट विद्वान, परम–मनीषी, समाज सुधारक, शिक्षाविद तथा ओजस्वी वक्ता श्री जगदेव सिंह सिद्धान्ती का जन्म हरियाणा की तहसील झज्जर के ग्राम बरहाणा में हुआ था। हाईस्कूल में पढ़ते समय ही वे सेना में भर्ती हो गये। 6 जाट पलटन में रहते हुए पहले विश्वयुद्ध में फ्रांस के मोर्चे पर लड़ने भेजे गये, जहां जर्मनी से मोर्चा छीनकर इस पलटन ने इतिहास रच दिया। सेना में रहते समय ही वे सिपाहियों को अंग्रेजी सिखाने लगे थे, जिससे न केवल इन्हें लोकप्रियता मिली, बल्कि सरकार ने वेतन वृद्धि भी कर दी। युद्ध समाप्त होने के बाद वे घर लौटे। लेकिन उनका तो उद्देश्य ही शिक्षा की जोत जलाना था। इसलिए संस्कृत अध्ययन के उद्देश्य से वे गुरूकुल मटिंडू पहुंच गये जहां बच्चों को गणित पढ़ाते हुए उन्होंने पंजाब विश्वविद्यालय की प्राज्ञ परीक्षा में सर्वाधिक अंक प्राप्त किये।

विशारद परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की और दो वर्ष लगाकर लाहौर से सिद्धान्त भूषण परीक्षा पास की जिसके बाद नाम के साथ सिद्धान्ती शब्द लगाना आरम्भ कर दिया। उनके परिश्रम और कार्यकुशलता के कारण गुरूकुल मटिंडू का सम्पूर्ण भार उनके कंधों पर डाल दिया गया था, लेकिन गुरूकुल के संस्थापक पीरू सिंह जी के निधन के बाद उन्हें संस्कृत विद्यालय किरठल, जिला मेरठ बुला लिया गया, जहां उन्होंने मृतपाय संस्था में जान डालने का उद्यम शुरू किया। संस्था को आर्य महाविद्यालय का रूप देकर पंजाब यूनिवर्सिटी से सम्बद्ध कराया। शिक्षा के प्रचार के साथ–साथ उन्होंने आर्यसमाज के अन्तर्गत सामाजिक उत्थान और कुरीतियों के विरूद्ध जोरशोर से प्रचार आरम्भ किया, जिसमें अन्य लोगों का साथ मिला। 1934 में प्रसिद्ध सीकर महायज्ञ और किसान सम्मेलन में उन्होंने राजस्थान के जाट समुदाय के लोगों का पथ–प्रदर्शन किया। 1939 में निजाम के विरूद्ध आर्यसमाज के हैदराबाद सत्याग्रह में उन्होंने सक्रिय भाग लिया। राष्ट्रीय स्वाधीनता आन्दोलन में उन्होंने सक्रिय भाग लिया। आजादी के बाद उन्होंने पंजाब के हिन्दी आन्दोलन में भाग लिया। 1962 में हरियाणा लोक समिति के प्रत्याशी के रूप में उन्होंने लोकसभा का चुनाव लड़ा और विजयी रहे। पंजाब से हिन्दी भाषी क्षेत्र को अलग करके हरियाणा निर्माण आन्दोलन में उन्होंने जोर शोर से भाग लिया। 1979 को उन्होंने इस नश्वर शरीर को त्याग दिया।

सूरजमल स्मारक शिक्षा संस्था नई दिल्ली के संस्थापकों में शामिल श्री नाथूराम मिर्धा का जन्म भी इसी माह में हुआ था। मिर्धा जी ने मार्च 1974 में कार्यकारिणी के अनुरोध पर संस्था अध्यक्ष पदा ग्रहण किया और 18 वर्ष तक इस पद पर रहकर संस्था की प्रगति में योगदान दिया। बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी मिर्धा जी का जन्म जोधपुर रियासत के नागौर परगने के बिलाड़ा गांव में 20 अक्तूबर 1921 को हुआ था। पारिवारिक अग्रज किसान केसरी श्री बलदेव राम मिर्धा के आग्रह पर जोधपुर विश्वविद्यालय से एलएलबी तथा लखनऊ विश्वविद्यालय से एमए करने के बाद उन्होंने वकालत के माध्यम से शोषित, वंचित, पीड़ित और भयभीत ग्रामजन को राहत दिलाने के साथ सार्वजनिक जीवन में प्रवेश किया। मारवाड़ किसान सभा का कार्य करते हुए वे चौधरी छोटूराम की सलाह से किसान छात्रावासों की स्थापना के कार्य में लग गये। किसान जागरण तथा भूमि सेटलमेंट के कार्य को उन्होंने गम्भीरता से लिया, सारे मारवाड़ की कृषिभूमि की माप कराई और किसानों को भूमि का स्वामित्व प्राप्त करने में सहयोग दिया। उनकी कार्यक्षमता को देखते हुए श्री बलदेवराम मिर्धा ने उन्हें मारवाड़ किसान सभा का सचिव बनाया। मारवाड़ में प्रतिनिधि सरकार की स्थापना के बाद वे कृषि और राजस्व मंत्री बनाये गये। उत्तर प्रदेश के किसानों को भूमि का स्वामी बनाने का जो ऐतिहासिक कार्य चौधरी चरण सिंह ने किया था, वही कार्य राजस्थान में करने का श्रेय नाथूराम मिर्धा जी को जाता है।

1952 के आम चुनाव में विजयी होकर मिर्धा जी राजस्थान सरकार में मंत्री बनाये गये और बीस वर्ष तक विभिन्न विभागों के मंत्री रहे। 1972 में वे राष्ट्रीय किसान आयोग के अध्यक्ष बनाये गये। उन्होंने किसानों की समस्याओं का गहन अध्ययन किया। यह उनकी लोकप्रियता ही थी कि 1977 की जनता पार्टी आंधी में जब श्रीमती इंदिरा गांधी सहित कांग्रेस के सारे दिग्गज चुनाव हार गये तो मिर्धा जी अकेले कांग्रेस प्रत्याशी की हैसियत से चुनाव जीते। वे आजीवन किसानों की सेवा में लगे रहे और इसके लिए किसानों ने भी उन्हें भरपूर सम्मान और प्यार दिया। उनके चुनाव–क्षेत्र में गये बिना उन्हें भारी मतों से जिताया। 1996 में जब उनका देहान्त हुआ वे कांग्रेस संसदीय दल के उपनेता थे।

अनुभव एक महान शिक्षक है, इसलिये गलतियों से डरो नहीं, उनसे सीख लो।

जब जाटों ने किया अंग्रेजों का सूर्यास्त

– जयपाल सिंह पुनियां, एम.ए. इतिहास,
वन मंडल अधिकारी (सेवानिवृत)

महाराजा केहरी सिंह के बाद 1777 ई० में भरतपुर राज्य की कमान माहराजा रणजीत सिंह ने सम्भाली। इनका जन्म 2 मई 1745 ई० में हुआ था। ये महाराजा जवाहर सिंह के भाई और महाराजा सूरजमल के तीसरे पुत्र थे।

भरतपुर में अंग्रेजों के खून से लाल कर दी थी ब्रज की धरा. 13 बार अंग्रेजी शासन की पगड़ी को पैरों के नीचे कुचला..

महाराजा रणजीत सिंह (2 मई 1745 – 6 दिसम्बर 1805) भरतपुर रियासत के महाराजा (शासनकाल 1778–1805) थे। वो महाराजा केहरी सिंह के उत्तराधिकारी थे।

कलकत्ता से इंग्लैंड तक टपके अंग्रेजों के आंसू

बात 1805 की है जब भरतपुर के महाराजा रणजीत सिंह जी को यह ज्ञात हुआ कि अंग्रेज भारत में गौ मांस खाते हैं तो उन्होंने तुरंत अंग्रेजों से संधि तोड़ दी और उन्होंने अंग्रेजों से सारे सम्बन्ध तोड़ने के साथ अपने राज्य में बिना आज्ञा घुसने पर प्रतिबंध लगा दिया।

उसी समय मराठा सेनापति यशवंत राव होल्कर अंग्रेजो से युद्ध कर रहा था। अंग्रेजी सेना ने उन्हें घेरने का प्रयास किया तो वे भागकर भरतपुर राज्य की सीमा में घुस गए... और उन्होंने अपने मित्र भरतपुर महाराज से शरण मांगी। महाराज श्री ब्रिजेन्द्र सवाई रणजीत सिंह जी को पता चला तो वे तुरंत अपने मित्र होल्कर को अपने दरबार में ले आये। जब अंग्रेजों को पता चला तो उन्हें काफी आश्चर्यजनक लगा। उन्होंने भरतपुर दरबार को चिट्ठी भेजी कि या तो होल्कर को छोड़ दें या फिर युद्ध के लिए तैयार रहे।

अंग्रेजों की इस धमकी का महाराज पर कोई असर न हुआ। उन्होंने कहा कि होल्कर मेरी शरण में आया है और शरणागत के लिए हम भारतीय अपने प्राणों तक की बाजी लगा सकते हैं, होल्कर मेरा मित्र भी है तुम नीच गौभक्षकों से मैं युद्ध करने के लिए आतुर हूँ।

यह सुनकर अंग्रेजी सेना ने क्रोधित होकर 2 जनवरी 1805 को भरतपुर पर आक्रमण कर दिया... यह युद्ध अप्रैल 1805 तक जारी रहा। तीन महीने चले इस युद्ध को महाभारत का आधुनिक संस्करण कहा जाता है। इस दौरान अंग्रेजों ने लोहगढ़ पर कुल 13 आक्रमण किये और 13 के 13 बार उन्हें मुंह की खानी पड़ी।

महाराज रणजीत सिंह और यशवंत राय होल्कर के निर्देशन में भरतपुर के मात्र 10,000 जाट यौद्धाओं ने 20 हजार अंग्रेजों को बुरी तरफ से मारा। लगभग साढ़े तीन हजार अंग्रेज इस युद्ध में मारे गए।

अंग्रेज स्वयं लिखते हैं कि जाट सैनिक इतने जोशीले भाव में लड़ रहे थे कि हम 60 यार्ड से उन्हें गोली मार रहे थे पर वे बचने के लिए एक बार भी सिर नीचे नहीं झुका रहे थे। ऐसा लग रहा था कि मानो गोली उन तक पहुंच ही न रही हो।

अंग्रेजों ने यह भी लिखा कि उन्हें युद्ध के समय भरतपुर में देवी शक्ति के दर्शन हुए। भरतपुर की कुलदेवी हाथ में भगवा ध्वज लिए किले की रक्षा कर रही थी।

एक अंग्रेज लेफ्टिनेंट टेम्पलटन जैसे तैसे ब्रितानी झंडा लेकर किले की दीवार पर गाड़ने जा पहुंचा। भरतपुर के सैनिकों ने उसे घेर लिया। जाटों ने उसे मारा नहीं बल्कि उसकी जूतों से पिटाई की। झंडे को जूतों तले रौन्दा और सैनिक को झंडे समेत नीचे खाई में फेंक दिया जहां दलदल में धसकर वह मर गया।

अंग्रेजों ने 4 बड़े हमलों के बारे में विस्तार से लिखा है...

उन्होंने बताया कि 9 जनवरी की रात को कर्नल रेयान, मेजर हॉक्स और लेफ्टिनेंट कर्नल मेटलैंड ने भरतपुर पर तीन ओर से एक साथ हमला किया। भारी गोलाबारी से किले की एक दीवार में छेद हो गया लेकिन जैसे ही अंदर घुसने की कोशिश की तो आगे जाट सैनिक यमराज बनकर उन पर टूट पड़े। इस युद्ध में 400 अंग्रेज मारे गए और मेटलैंड घायल होकर गिर पड़ा। हमने जैसे तैसे अपनी जान बचाई। कई सैकड़ों सैनिक घायल अवस्था में कहरा रहे थे।

हमने 16 जनवरी को एक आक्रमण किया जिसमें 500 अंग्रेज मारे गए जिसमे एक सेनापति लेफ्टिनेंट कर्नल मैकरॉय को भी भरतपुर के सैनिकों ने मौत के घाट उतार दिया। अंग्रेजी सेना के हजार के लगभग सैनिक घायल हो गए थे।

21 जनवरी के आक्रमण के दौरान अंग्रेजों ने भारी गोलाबारी की जिससे किले की दीवार के कुछ हिस्से टूट गए। लेकिन किसी भी अंग्रेज सैनिक की आगे बढ़ने की हिम्मत न हुई। क्योंकि वे जानते थे कि वे दीवार पार तो कर देंगे लेकिन आगे खड़े जाटों के पास पहुंचने पर वापिस जीवित न आ पाएंगे।

अंग्रेज लिखते हैं कि सबसे भयानक तो ये था कि किले की दीवारों पर जाटों से लड़कर घायल होने वाले अंग्रेजी सैनिक नीचे खाई में जा गिरते व निकल नहीं पा रहे थे। और बाद में समय मिलने पर जाट सैनिक नीचे आते और उन्हें मौत के घाट उतार देते थे।

6 फरवरी के आक्रमण के दौरान अंग्रेजों ने सुरंग बनाई लेकिन जाटों को पता चल गया और सुरंग के मुहाने पर खड़े जाटों ने एक एक को काट दिया।

21 फरवरी के आक्रमण के दौरान अंग्रेजों ने जान की बाजी लगा दी उन्होंने एक दूसरे के कंधे पर चढ़कर दीवार पर चढ़ने की कोशिश की। जाटों ने अंग्रेजों पर गोलियां व्यर्थ न करके पत्थर बरसाने शुरू कर दिए सब सैनिक घायल होकर भाग खड़े हुए। एक तरफ गोलाबारी से कुछ छेद हुए लेकिन वहां पहुंचने वाले अंग्रेजों को भी जाटों ने मौत के घाट उतार दिया।

इस तरह कुल 13 आक्रमणों में साढ़े 3 हजार ब्रिटिश सैनिक मारे गए जिनमें बड़ी संख्या में बड़े अधिकारी शामिल थे और लगभग 8 हजार ब्रितानी सैनिक घायल हुए। ऐसा कोई सैनिक न बचा था जिसे कहीं चोट न लगी हो।

कहते हैं कि जाटों ने अंग्रेजों को कलकत्ता तक रुलाया था। जाट भरतपुर में अंग्रेजों को मार रहे थे और उनके परिवार व ईस्ट इंडिया कम्पनी की चीखें तत्कालीन राजधानी कलकत्ता से निकल रही थी।

अंग्रेज सेनापतियों ने दूर डेरे डाले और फिर प्रशासन को समझाया कि यहां हमारा सूर्यास्त हो चुका है अगर अब और लड़े तो बहुत दुष्परिणाम होंगे।

लार्ड लेक ने स्वयं इंग्लैंड में वेलजली को पत्र लिखते हुए कहा कि हमें लगता था कि हम भरतपुर को आसानी से जीत लेंगे लेकिन यह हमारी भूल थी। हम हार रहे हैं अब और आगे लड़े तो हमें इतना नुकसान होगा कि हम उसकी कल्पना भी नहीं कर सकते।

उस समय भरतपुर कोई बड़ा राज्य न रह गया था। दिल्ली के बादशाह व रुहेले एवं पठानों से लड़ने के कारण महाराज रणजीत सिंह का कोष पहले से ही खाली था।

अंग्रेजों ने संधि का प्रस्ताव भेजा, भरतपुर के कुलपुरोहित एवं मंत्रियों ने संधि को स्वीकृत करने के लिए महाराज पर दबाव डाला क्योंकि राज्य के आर्थिक हालात कमजोर थे।

उधर अंग्रेज भी पड़ोसी राज्यों के माध्यम से महाराज पर दबाव बना रहे थे।

हालांकि युद्ध और चलता तो भरतपुर की सेना का गोला बारूद खत्म होने की कगार पर था जिसके दुष्परिणाम हो सकते थे।

इसलिए अंत में संधि की गई कि अंग्रेज भरतपुर पर कभी आक्रमण न करेंगे। और गौहत्या करने की हिम्मत न करेंगे।

महाराज रणजीत सिंह ने इस युद्ध की याद में फतेह बुर्ज का निर्माण किया था।

इन युद्ध की इतनी ख्याति फैल गयी थी कि ब्रिज कवि से लेकर पूरे राजस्थान के कवि भरतपुर का उदाहरण देकर अपने क्षेत्र व राज्यों के प्रितिनिधियो को जगाने का प्रयास करने लगे थे....

जोधपुर के राज कवि बांकीदास जी ने लिखा कि

पूरा जोधड़, उदैपुर, जैपुर, पहूँ थारा खूटा परियाणा।
कायरता से गई आवसी नहीं बाकें आसल किया बखाणा।।
बजियाँ भलो भरतपुर वालो, गाजै गरज धरज नभ भौम।
पैलां सिर साहब रो पडिघ्यो, भड उभै नह दीन्हीं भौम ।।

अर्थ है कि "हे जोधपुर, उदयपुर और जयपुर के मालिको ! तुम्हारा तो वंश ही खत्म हो गया। कायरता से गई भूमि कभी वापिस नहीं आएगी, बांकीदास ने यह सच्चाई वर्णन की है। भरतपुर वाला जाट तो खूब लड़ा। तोपें गरजीं, जिनकी धूम आकाश और पृथ्वी पर छाई थी। अंग्रेजों के सिर काट डाले, लेकिन खड़े–खड़े अपनी भूमि नहीं दी।"

महाराजा रणजीत सिंह ने गौरक्षा, शरणागत की रक्षा, मित्रता एवं देश और राज्य के लिए अपना सर्वस्व लगा दिया था और अंग्रेजों को दिखा दिया था कि हम किसी से कम नहीं हैं। महाराज रणजीत सिंह जी ने अंग्रेजों से पहले दिल्ली की मुगल सत्ता, पठान व रुहेलों के खिलाफ भी युद्ध लड़े और धर्म रक्षा करते हुए भगवा ध्वज की शान बढ़ाने का निरंतर प्रयास किया।

बड़े खेद की बात है कि कर्नल जैम्सटॉड ने अपनी पुस्तक **"राजस्थान का इतिहास"** में लार्डलेक की इस करारी हार और जाटों की अद्बितीय वीरता और जीत का जिक्र तक भी नहीं किया, जबकि वह इस युद्ध के समय अपने मुख्य कार्यालय उदयपुर में ही थे। भरतपुर युद्ध के 8 मास पश्चात् दिसम्बर 1805 ई० में महाराजा रणजीत सिंह का स्वर्गवास हो गया। उसके पश्चात् उनके 4 पुत्रों में सबसे बड़े राजकुमार रणधीर सिंह ने भरतपुर राज्य की बागडोर अपने हाथ में ली।

जाट समाज भूतकाल तो स्वर्णिम दौर में था

– बी.एस. गिल, सचिव
जाट सभा (मो० 9888004417)

जाट समाज के बारे में भाई विजय राज द्वारा संग्रहित कुछ तथ्य जिनको आप सभी शेयर करें। जाट समाज भूतकाल तो स्वर्णिम दौर में था।सामाजिक, शैक्षणिक,आर्थिक व राजनीतिक उत्थान के लिए वर्तमान और भविष्य को और अधिक उज्जवल बनाने की दिशा में और कड़ी मेहनत एकजुट होकर करनी होगी।विकास की कोई सीमा नही होती। आओ मिलकर आगे बढ़े।

इन खतरनाक जाटो से बचो – सिकंदर

भारत का भविष्य जाटो पर निर्भर है – पंडित मदन मोहन मालवीय

जैसे जाटो के लिये कुछ बडे और महान लोगों ने जाटो के बारे मे जो कहा जरा पढ़ो तो एक बार...

जाटों के विषय में की गई महापुरुषों की टिप्पणियाँ

1. यात्री अल बेरूनी – इतिहासकार – मथुरा में वासुदेव से कंस की बहन से कृष्ण का जन्म हुआ। यह परिवार जाट था और गाय पालने का कार्य करता था।

2. इतिहासकार डॉ० रणजीतसिंह – जाट तो उन योद्धाओं के वंशज हैं जो एक हाथ में रोटी और दूसरे हाथ में शत्रु का खून से सना हुआ मुण्ड थामते रहे।

3. इतिहासकार डॉ० धर्मचन्द्र विद्यालंकार – आज जाटों का दुर्भाग्य है कि सारे संसार की संस्कृति को झकझोर कर देने वाले जाट आज अपनी ही संस्कृति को भूल रहे हैं।

4. इतिहासकार डॉ० गिरीशचन्द्र द्विवेदी – मेरा निष्कर्ष है कि जाट संभवतः प्राचीन सिंध तथा पंजाब के वैदिक वंशज प्रसिद्ध लोकतान्त्रिक लोगों की संतान हैं। ये लोग महाभारत के युद्ध में भी विख्यात थे और आज भी हैं।

5. स्वामी दयानन्द महाराज आर्यसमाज के संस्थापक ने जाट को जाट देवता कहकर अपने प्रसिद्ध ग्रंथ सत्यार्थप्रकाश में सम्बोधन किया है। देवता का अर्थ है देनेवाला। उन्होंने कहा कि संसार में जाट जैसे पुरुष हों तो ठग रोने लगजाएं।

6. प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ तथा हिन्दू विश्वविद्यालय बनारस के संस्थापक महामहिम मदन मोहन मालवीय ने कहा – जाट जाति हमारे राष्ट्र की रीढ़ है। भारत माता को इस वीर जाति से बड़ी आशाएँ हैं। भारत का भविष्य जाट जाति पर निर्भर है।

7. दीनबन्धु सर छोटूराम ने कहा – हे ईश्वर, जब भी कभी मुझे दोबारा से इंसान जाति में जन्म दे तो मुझे इसी महान् जाट जाति के जाट के घर जन्म देना।

8. कर्नल जेम्स टॉड राजस्थान इतिहास के रचयिता। (i) उत्तरी भारत में आज जो जाट किसान खेती करते पाये जाते हैं ये उन्हीं जाटों के वंशज हैं जिन्होंने एक समय मध्य एशिया और यूरोप को हिलाकर रख दिया था। (ii)राजस्थान में राजपूतों का राज आने से पहले जाटों का राज था। (iii) युद्ध के मैदान में जाटों को अंग्रेज पराजित नहीं कर सके। (iv) ईसा से500 वर्ष पूर्व जाटों के नेता ओडिन ने स्कैण्डेनेविया में प्रवेश किया। (v) एक समय राजपूत जाटों को खिराज (टैक्स) देते थे।

9. यूनानी इतिहासकार हैरोडोटस ने लिखा है (i) There was no nation in the world equal to the jats in bravery provided they had unity अर्थात् – संसार में जाटों जैसा बहादुर कोई नहीं बशर्ते इनमें एकता हो। (यह इस प्रसिद्ध यूनानी इतिहासकार ने लगभग 2500 वर्ष पूर्व में कहा था। इन दो लाइनों में बहुत कुछ है। पाठक कृपया इसे फिर एक बार पढें। यह जाटों केलिए मूलमंत्र भी है : लेखक) (ii) जाट बहादुर रानी तोमरिश ने प्रशिया के महान राजा सायरस को धूल चटाई थी। (iii) जाटों ने कभी निहत्थों पर वार नहीं किया।

10. महान् सम्राट् सिकन्दर जब जाटों के बार–बार आक्रमणों से तंग आकर वापिस लौटने लगे तो कहा– इन खतरनाक जाटों से बचो।

11. हमलावर तैमूरलंग ने कहा – जाट एक बहुत ही ताकतवर जाति है, शत्रु पर टिड्डियों की तरह टूट पड़ती है, इन्होंने मुसलमानों के हृदय में भय उत्पन्न कर दिया।

12. हमलावर अहमदशाह अब्दाली ने कहा – जितनी बार मैंने भारत पर आक्रमण किया, पंजाब में खतरनाक जाटों ने मेरा मुकाबला किया। आगरा, मथुरा व भरतपुर के जाट तो नुकीले काटों की तरह हैं।

13. एक प्रसिद्ध अंग्रेज मि. नेशफील्ड ने कहा – जाट एक बुद्धिमान् और ईमानदार जाति है।

14. इतिहासकार सी.वी. वैद ने लिखा है – जाट जाति ने अपनी लड़ाकू प्रवृत्ति को अभी तक कायम रखा है। (जाटों

को इस प्रवृत्ति को छोड़ना भी नहीं चाहिए, यही भविष्य में बुरे वक्त में काम भी आयेगी – लेखक)

15. भारतीय इतिहासकार शिवदास गुप्ता – जाटों ने तिब्बत, यूनान, अरब, ईरान, तुर्कीस्तान, जर्मनी, साईबेरिया, स्कैण्डिनोविया, इंग्लैंड, ग्रीक, रोम व मिश्र आदि में कुशलता, दृढ़ता और साहस के साथ राज किया। और वहाँ की भूमिको विकासवादी उत्पादन के योग्य बनाया था। (प्राचीन भारत के उपनिवेश पत्रिका अंक 4.5 1976)

16. हर्षि पाणिनि के धातुपाठ (अष्टाध्यायी) में – जट झट संघाते – अर्थात् जाट जल्दी से संघ बनाते हैं। (प्राचीनकाल में खेती व लड़ाई का कार्य अकेले व्यक्ति का कार्य नहीं था इसलिए यह जाटों का एक स्वाभाविक गुण बन गया –लेखक)

17. महर्षि यास्क – निरुक्त में – जागृति इति जाट्यम् – जो जागरूक होते हैं वे जाट कहलाते हैं। जटायते इति जाट्यम् – जो जटांए रखते हैं वे जाट कहलाते हैं।

18. दूसरे विश्वयुद्ध में जर्मनी की हार पर जर्मन जनरल रोमेल ने कहा– काश, जाट सेना मेरे साथ होती। (वैसे जाट उनके साथ भी थे, लेकिन सहयोगी देशों की सेना की तुलना में बहुत कम थे – लेखक)

19. सुप्रसिद्ध अंग्रेज योद्धा जनरल एफ.एस. यांग – जाट सच्चे क्षत्रिय हैं। ये बहादुरी के साथ–साथ सच्चे, ईमानदार और बात के धनी हैं।

20. महाराजा कृष्णसिंह भरतपुर नरेश ने सन् 1925 में पुष्कर में कहा – मुझे इस बात पर अभिमान है कि मेरा जन्म संसार की एक महान् और बहादुर जाति में हुआ।

21. महाराजा उदयभानु सिंह धोलपुर नरेश ने सन् 1930 में कहा– मुझे पूरा अभिमान है कि मेरा जन्म उस महान् जाट जाति में हुआ जो सदा बहादुर, उन्नत एवं उदार विचारों वाली है। मैं अपनी प्यारी जाति की जितनी भी सेवा करूँगा उतना ही मुझे सच्चा आनन्द आयेगा।

22. डॉ. विटरेशन ने कहा – जाटों में चालाकी और धूर्तता, योग्यता की अपेक्षा बहुत कम होती है।

23. मेजर जनरल सर जॉन स्टॉन (मणिपुर रजिडेंट) ने अपने एक जाट रक्षक के बारे में कहा था – ये जाट लोग पता नहीं किस मिट्टी से बने हैं, थकना तो जानते ही नहीं।

24. अंग्रेज हर प्रकार की कोशिशों के बावजूद चार महीने लड़ाई लड़कर भी भरतपुर को विजय नहीं कर पाये तो लार्ड लेकेक ने लिखा है – हमारी स्थिति यह है कि मार करने वाली सभी तोपें बेकार हो गई हैं और भारी गोलियाँ पूर्णतः समाप्त हो गई हैं। हमारे एक तिहाई अधिकारी व सैनिक मारे जा चुके हैं। जाटों को जीतना असम्भव लगता है। उस समय वहाँ की जनता में यह दोहा गाया जाता था– यही भरतपुर दुर्ग है, दूसह दीह भयंकार। जहाँ जटन के छोकरे, दीह सुभट पछार।

25. बूंदी रियासत के महाकवि ने महाराजा सूरजमल के बारे में एक बार यह दोहा गाया था – सहयो भले ही जटनी जाय अरिष्ट अरिष्ट। जापर तस रविमल्ल हुवे आमेरन को इष्ट।। अर्थात् जाटनी की प्रसव पीड़ा बेकार नहीं गई, उसने ऐसे प्रतापी राजा तक को जन्म दिया जिसने आमेर व जयपुर वालों की भी रक्षा की (यह बात महाराजा सूरजमल के बारे में कही गई थी जब उन्होंने आमेर व जयपुर राजपूत राजाओं की रक्षा की)।

26. इतिहासकार डॉ० जे. एन. सरकार ने सूरजमल के बारे में लिखा है – यह जाटवंश का अफलातून राजा था।

27. इतिहासकार डी.सी. वर्मा– महाराजा सूरजमल जाटों के प्लेटो थे।

28. बादशाह आलमगीर द्वितीय ने महाराजा सूरजमल के बारे में अब्दाली को लिखा था –जाट जाति जो भारत में रहती है, वह और उसका राजा इतना शक्तिशाली हो गया है कि उसकी खुली खुलती है और बंधी बंधती है।

29. कर्नल अल्कोट – हमें यह कहने का अधिकार है कि 4000 ईसा पूर्व भारत से आने वाले जाटों ने ही मिश्र (इजिप्ट) का निर्माण किया।

30. यूरोपीयन इतिहासकार मि० टसीटस ने लिखा है – जर्मन लोगों को प्रातः उठकर स्नान करने की आदत जाटों ने डाली। घोड़ों की पूजा भी जाटों ने स्थानीय जर्मन लोगों को सिखलाई। घोड़ों की सवारी जाटों की मनपसंद सवारी है।

31. तैमूर लंग – घोड़े के बगैर जाट, बगैर शक्ति का हो जाता है। (हमें याद है आज से लगभग 50वर्ष पहले तक हर गाँव में अनेक घोडे, घोड़ियाँ जाटों के घरों में होती थीं। अब भी पंजाब व हरियाणा में जाटों के अपने घोड़े पालने के फार्म हैं – लेखक)

32. भारतीय सेना के ले० जनरल के.पी. कैण्डेय ने सन् 1971 के युद्ध के बाद कहा था – अगर जाट न होते तो फाजिल्का का भारत के मानचित्र में नामोनिशान न रहता।

33. इसी लड़ाई (सन् 1971) के बाद एक पाकिस्तानी मेजर जनरल ने कहा था – चौथी जाट बटालियन का आक्रमण भयंकर था जिसे रोकना उसकी सेना के बस की बात नहीं रही। (पूर्व कप्तान हवासिंह डागर गांव कमोद जिला भिवानी

(हरियाणा) जो 4 बटालियन की इस लड़ाई में थे, ने बतलाया कि लड़ाई से पहले बटालियन कमाण्डर ने भरतपुर के जाटों का इतिहास दोहराया था जिसमें जाट मुगलों का सिहांसन और लाल किले के किवाड़ तक उखाड़ ले गये थे। पाकिस्तानी अफसर मेजर जनरल मुकीम खान पाकिस्तानी दसवें डिवीजन के कमांडर थे।)

34. भूतपूर्व राष्ट्रपति जाकिर हुसैन ने जाट सेण्टर बरेली में भाषण दिया – जाटों का इतिहास भारत का इतिहास है और जाट रेजिमेंट का इतिहास भारतीय सेना का इतिहास है। पश्चिम में फ्रांस से पूर्व में चीन तक 'जाट बलवान–जय भगवान' का रणघोष गूंजता रहा है।

35. विख्यात पत्रकार खुशवन्त सिंह ने लिखा है – (i) "The Jat was born worker and warrior- He tilled his land with his sword girded round his waist. He fought more battles for the defence for his homestead than other Khashtriyas" अर्थात् जाट जन्म से ही कर्मयोगी तथा लड़ाकू रहा है जो हल चलाते समय अपनी कमर से तलवार बांध कर रखता था। किसी भी अन्य क्षत्रिय से उसने मातृभूमि की ज्यादा रक्षा की है। (ii) पंचायती संस्था जाटों की देन है और हर जाटों का गांव एक छोटा गणतन्त्र है।

36. जब 25 दिसम्बर 1763 को जाट प्रतापी राजा सूरजमल शाहदरा में धोखे से मारे गये तो मुगलों को विश्वास ही नहीं हुआ और बादशाह शाहआलम द्वितीय ने कहा – जाट मरा तब जानिये जब तेरहवीं हो जाये। (यह बात विद्वान् कुर्क ने भी कही थी।)

37. एक बार अलाउद्दीन ने देहली के कोतवाल से कहा था – इन जाटों को नहीं छेड़ना चाहिए। ये बहादुर लोग ततैये के छत्ते की तरह हैं, एक बार छिड़ने पर पीछा नही छोड्ते।।

गुरु तेग बहादुरजी का 350वां शहीदी दिवसतथा हरियाणवी समर्पण

– सूरजभान दहिया, (मो० 9818120950)

हरियाणा सरकार द्वारा हिंद की चादर श्री गुरु तेगबहादुर जी का 350वाँ शहीदी दिवस समर्पण भावना से मनाने का भव्य कार्यक्रम बनाया है। इसकी एक ऐतिहासिक पृष्ठ भूमि है। गुरु तेग बहादुर जी ने धर्म, मानवीय मूल्यो, आर्दशो एवं सिद्धान्त की रक्षा हेतु 24 नवम्बर 1675 को चांदनी चौक दिल्ली में अपने प्राणों की आहुति दी थी। उनका शीश धड़ से अत्याचारी शासक औरंगजेब के हुक्कम पर अलग कर दिया गया था। प्रश्न था कि गुरु जी के शीश एवं धड़ का दाह संस्कार कैसे किया जाये? मातृभूमि को नमन करते गुरु जी के शीश को उनके अनुयायियो ने श्रृद्धापूर्वक वहाँ से उठाया एवं दाह संस्कार हेतु वहां से निकल पडे। जब औरंगजेब के सैनिको ने इसबात की जानकारी मिली तो उन्होंने अनुयायियों का पीछा किया। वे गुरु जी के शीश लिये सुरक्षित जी०टी० रोड पर स्थित गांव बढा पहुंचे, जिसे आजकल बढ–खालसा कहा जाता है। वहाँ वे कौशाल सिह दहिया के घर सुरक्षा प्रदान करने हेतु प्रवेश हुये तथा उन्होने कौशाल जी को गुरु जी के शहीद होने की पूरी जानकारी दी। उन्होंने आगे बताया कि उनके पास गुरु जी का शीश है जिसका सम्मानपूर्वक दाह संस्कार करना है तथा औरंगजेब के सैनिक उनका पीछा कर रहे हैं।

कौशाल सिह दहिया एक बुद्धिमान व्यक्ति थे, उन्होंने गम्भीर परिस्थिति का संज्ञान लिया और यह निष्कर्ष निकाला कि गुरुजी के शीश को औरंगजेब के सैनिको से बचाना कठिन होगा। उन्होंने साहस व बुद्धिमता का परिचय दिया और अनुयामियों को गुरुजी के शीश के साथ सुरक्षित गन्तव्य तक जाने के लिये व्यवस्था की। तत्पश्चात् उन्होंने अपने पुत्र को बुलाकर तेज गंडासी से अपने शीश को धड़ से अलग करने को कहा तथा निर्देश दिया कि वह मेरे शीश को धड़ से अलग करने के पश्चात् धड़ को दूसरे अंधेरे ओबरे में छुपा देना और जब औरंगजेब के सैनिक यहाँ पहुंचे तो मेरे शीश को गुरुजी का शीश कहकर उन्हें सुपूर्द कर देना । पूछते – पूछते कुछ समय पश्चात् औरगंजेब के सैनिक वहां पहुँच गये। कौशाल सिंह दहिया के बेटे ने सैनिको को बताया कि यह गुरु जी का शीश है तथा उनके अनुयायी डर के कारण वहां से भाग गये हैं। सैनिक उस शीश को लेकर दिल्ली की ओर प्रस्थान कर गये। गाँव में सन्नाटा था परन्तु कौशाल दहिया के बलिदान के प्रति सभी गाँव वाले नतमस्तक थे।

जब चांदनी चौक की कोतवाली जल्लाद जलालीन ने गुरु साहिब का शीश तलवार से अलग किया तो थोडी दूर एक किसान अपने दो बैलों के साथ खडा इस शहीदी दृश्य को देख रहाथा। वह चाँदनी चौक में अपने कृषि उत्पाद बेचने तथा घरेलू सामान खरीदने आया हुआ था। कुछ समय के पश्चात् उन्होंने पाया कि कोतवाली के सैनिक गुरुजी के अनुयामियों को पकड़ने हेतु निकल पडे हैं। उसने अपनी बैलगाडी से बाजरे की पुलियों को निकालकर जहां गुरुजी का धड़ पड़ा हुआ था वहां बिखेर दिया तथा गुरुजी के धड़को

जो गिरने से डरते हैं, वो उड़ान कभी नहीं भर सकते।

उठाकर अपनी बैलगाडी में शेष बची पुलियों के नीचे छुपा दिया। फिर उसने अपनी बैलगाठी से दराती निकालकर अपनी अंगुली काट कर जमीन पर पड़ी पुलियों के पास खून फैला दिया ताकि यह लगे कि पुलियों के नीचे गुरुची का धड़ ढ़का हुआ है। वह तुरंत फिर से अपनी बैलगाड़ी रवाना करके निकल पड़ा।

यह अति साहसपूर्ण एक जोखिम भरा काम था किसान अपनी बैलगाडी को गंभीर मुद्रा में हांक रहा था। कुछ कोस चलने के पश्चात् उसने एक अपनी बैलगाडी को घने से पेडों के पास रोक दिया। एक किसान अपनी बैलगाडी में जेली, कुल्हाडी, दराती, कस्सी तथा एक हांड़ी में गोबर के उपले में सुलगती आग लेकर चलता है। उसने सुखी लकड़ियो को इकट्ठा करके घने पेड़ों के जगल में थोड़ा सा अन्दर जाकर गुरुजी के धड़ का अन्तिम संस्कार कर दिया और तत्पश्चात् आत्म सन्तुष्टी के साथ अपने गन्तव्य की ओर चलदिया कोतवाली में धड़ का गायब होना और उसका न मिलना एक भयावह स्थिति बन चुकी थी। बाद में विदित हुआ कि गुरुजी के धड़ का पास के जंगल में दाह संस्कार कर दिया गया है। गुरुजी के धड़ का सम्मान पूर्वक दाह संस्कार करने वाले किसान महेन्द्रगढ़ जिले के बनावली गाँव के गोंदा दहिया थे। उधर गुरुजी के शीश का भी सम्पूर्ण श्रृद्धा भावना के साथ आनन्दपुर साहिब में दाह संस्कार हुआ था।

आजकल भारत के वास्तविक इतिहास के लेखन पर बड़ा जोर दिया है। दरअसल यह जानना जरूरी है कि इतिहास है क्या ? यदि वास्तविकता को समझे तो जन ही इतिहास है, परंतु जन साधारण तो इतिहास से गायब रहता है। उसका संघर्ष उसका बलिदान एवं उसका सर्म्पण रहता है। उसका सम्पर्ण इतिहासकारों की दृष्टि से ओझल रहता है। परंतु मौखिक इतिहास में कम जनसाधारण की कुर्बानी तथा संघर्ष सदैव जीवित रहे हैं। हरियाणा में एक लोकगीत सुनने को मिलता हैः–

"मेरे अनपढ़ दादा का,
कुछ पढे लिखे लोग बलिदानी इतिहास खा गये"

वे पुरखों की शाहदत का इतिहास गायब गायब कर गये, ईब कोई हनुमान म्हारा साच्चा इतिहास ठा लाये, मुर्छित कौम की वो संजीवनी बन जाये।

हरियाणा सरकार निष्ठावान है कि श्री गुरु तेगबहादुर जी के जीवन और बलिदान को देश के आमजन को अवगत कराया जाये। गुरु जी से जुडे पवित्र स्थलो पर गुरुद्वारे बने हुये हैं– चान्दनी चौक दिल्ली में शीशगंज साहिब गुरुद्वारा है, बढ़खालसा में गुरुद्वारा है, रकाबगंज जहाँ गोंदा दहिया ने गुरुजी के धड़ का दाह संस्कार किया था, वहाँ पर गुरुद्वारा है, गुरुजी के शीश का जहाँ दाह संस्कार हुआ, वहॉ पर आनन्दपुर साहिब गुरुद्वारा है। क्या यह कुछ संकोच का विषय नहीं लगता कि गोंदा दहिया के पैतृक गांव में बनावली में गुरुद्वारा सृजित नहीं हुआ। हरियाणा में गुरुजी के 350वें शहीदी दिवस के आयोजन के संबंध में कहीं। बढ़खालसा मैं बलिदानी कौशाल सिंह दहिया का उल्लेख नहीं किया गया और न ही गुरुजी के धड़ का संस्कार करने वाले निर्भीक व समर्पित शक्ति गोंदा दहिया का स्मरण हुआ। क्या समस्त सिख समाज का नैतिक दायित्त्व नहीं बनता कि वह कौशाल सिह दहिया तथा गोंदा दहिया की आज की पीढ़ियों को सरोपा भेंटकर उचित सम्मान दिया जायें। हमे यह आभास होना चाहिये कि गुरुजी के 350वें शहीदी दिवस पर यदि उपरोक्त विभूतियों के परिवारों को न जोड़ा गया तो हम गुरुजी के बलिदान को सम्पूर्ण रूप से श्रृद्धाजंलि न दे पायेंगे।

एक हरियाणवी, दिलेरी से जूझकर लहुलुहान होता है। फिर कुर्बानी गर्व से मुस्कराती है। इसका एक दृष्टांत वीर कौशाल दहिया है। इस प्रकार असंख्या हरियाणवी हैं। हरियाणा के खून में देश के लिए व समाज के लिए जान पर खेल जाना एक परम्परा है। इन वीर सपूतो को श्रृद्धा सुमन अर्पित करते हुये, मैं रामधारी सिंह दिनकर की कुछ पंक्तियो उल्लेख कर रहा हूँः–

जली अस्थिया बारी–बारी, जिन्होंने छिटकायी चिनगारी।
जो चढ़ गए पुण्य वेदीपर लिये बिना गरदन कामोल।
कलम आज उनकी जय बोल।

हरियाणा में इस फितरत के इतिहास को क्यों गायब कर रखा है–यह इस प्रति की महानतम त्रासदी बनी हुई है। हरियाणा सरकार उसके प्रति अति संवेदनशील होनी चाहिये। गुरुतेग बहादुर जी की शहीदी तथा उससे संबंधित हरियाणवियों की सर्म्पनता की अभिन्न इतिहास के क्षण है यही गुरुजी के 350वें शहीदी दिवस का कुरुक्षेत्र में राज्य स्तरीय आयोजन के गौरवपूर्ण बेला होगी। यह कौशाल सिंह दहिया बलिदान दिवसभी है। इतिहास फिर बताये कि कौशाल सिंह दहिया जैसी कुर्बानी और कही विश्व इतिहास मैं दर्ज हैं? मेरा पुनः आग्रह है कि जाट कौम के दबे गौरवशाली इतिहास को उजागर करके आप अपनी युवा पीढ़ी को प्ररेणा हेतु उपलब्ध कराये। राजतंत्र कभी भी ऐसा दायित्त्व नहीं निभायेगा।

आज टट्टी की आड़ में शिकार क्यों खेला जा रहा है।

– डॉ० धर्मचन्द्र विद्यालंकार, (मो० 9991816826)

आजकल इतिहास के पाठ्यक्रम में परिवर्तन का प्रभञ्जन चल रहा है। इस सबको भी हिन्दू राष्ट्रवाद की संस्थापना का ही उत्तम अभियान घोषित किया जा रहा है। राष्ट्रवादी जो धारा इतिहास लेखन की थी, वह हमारी राष्ट्रीय एकता को ही सबल और सुदृढ करने वाली थी। परन्तु वर्तमान काल में जिस राष्ट्रवाद का सहारा लेकर सकीर्ण और सामुदायिक विचारधारा का प्रचार–प्रसार किया जा रहा है, वह कहीं भीषण भयावह है। कारण, क्योंकि वह हमारी आन्तरिक जो राष्ट्रीय एकता हे, उसको कमजोर करने वाला ही तो है।

आजकल हमारे तथाकथित हिन्दू राष्ट्रवादियों का इतिहास में परिवर्तन करने के पीछे एकमात्र तर्क यही बस रहता है कि मध्यकालीन भारतीय इतिहास में केवल मुगलों की ही चर्चा क्यों प्रायः की जाती है। हमारे हिन्दू क्षेत्रीय क्षत्रपों और धर्मयोद्धाओं को क्यों नहीं पढाया जाता है सर्वप्रथम जब हम अखण्ड भारतवर्ष की एकता का ही आलाप जब करते हैं, तब हमें कंवल दिल्ली और आगरा की केन्द्रीय शक्तियों और सरकारों के ही कार्यकलापों पर दृष्टिपात करना होता है। केवल नाम बदलने से ही कोई व्यवस्था अच्छी नहीं बन जाती है।

बॉल्क जो क्षेत्रीय सामन्ती और साम्प्रदायिक शक्तियाँ उस काल में हमारी राष्ट्रीय एकता को छिन्न–भिन्न करने में जुटी हुई थी। उनका गौरव–गान हम वर्तमान काल के राष्ट्रीय इतिहास में कैसे कर सकते हैं। मानिए यदि आज जम्मू–कश्मीर का मुस्लिम मुख्यमंत्री हमारे वर्तमान प्रधानमंत्री के विरुद्ध विद्रोह का बिगुल बजाकर अपनी प्रादेशिक स्वतंत्रता का ही एकालाप करने लगे तो क्या हम उसको अच्छा मानेंगें।

(क) दिल्ली सल्तनत काल के शासन सुधार क्या थे।

इसी प्रकार से जो लोग मुगलों की केन्द्रीय सत्ता के विरुद्ध अपनी प्रादेशिक या साम्प्रदायिक स्वतंत्रता के लिए सामन्त वर्ग भी संघर्ष–सन्नद्ध था, क्या हम उसको राष्ट्रीय एकता का साधक कह सकते हैं। वह हमारी संकीर्ण साम्प्रदायिक विचारधारा ही तो कही जाएगी। बावजूद इसके कि जबकि पूरे ही मुगलकाल में अकेले औरंगजेब के 50 वर्ष के शासनकाल में छोडकर शेष समस्त मुगलकालीन शासन–विधान में हमें कहीं कोई किसी प्रकार की संकोर्णता साम्प्रदायिक या जातीय स्तर पर दिखाई नहीं देती है। औरंगजेब ने भी जो अपनी संकीर्ण राजनीति की जो शुरूआत की थी, वह भी अपने शासन के 12वें वर्ष के पश्चात 1669 ई० से ही आरम्भ की थी। उसको पृष्ठभूमि में भी क्या राजनीतिक और सामाजिक दबाब रहे होंगे वह सब शोध की ही विषय है। फिर महाकाल मन्दिर उज्जैन और चित्रकूट के राम मन्दिरों को मुक्त हस्त से उसके द्वारा दत्त अनुदान भी हमें नहीं भूलना होगा। जबकि काशी के विश्वनाथ मंदिर के ध्वज के लिए तो कुछ दुराचारी हिन्दू पुजारियों को ही उत्तरदायी भी आधुनिक खोजों में पाया गया है।

यहाँ पर हमें यह भी देखना होगा कि तुगलक और खिलजी तथा लोधियों की जो दिल्ली की सल्तनत थी, उसमें भी कई भूमि और शासन सम्बन्धी सुधारों के बावजूद भी हिन्दुओं की सहभागिता शासन–प्रशासन में नहीं थी। हालांकि फिरोज शाह तुगलक ने पाँच–पाँच नहरें पंजाब में निकलवाई थी और अलाउध्दीन खिलजी ने मण्डी की व्यवस्था और माप–तोल के बाटों का मानकीकरण किया था और एक इतनी बडी और शक्तिशाली पाँच लाख की सैन्य शक्ति खडी की थी कि तुगलक सल्तनत के बाद मंगोलों की हिमाकत दिल्ली की ओर आने की कहाँ हुई थी। शेरशाह सूरी ने सबसे लम्बा राजमार्ग बनवाया था।

(ख) मुगलकालीन शासन–सत्ता सर्वसुलभ थी।

वैसे तो तुर्कों की बजाय अफगानों में भाईचारे की भव्य भावना कहीं अधिक थी। यह भी कहा जाता है कि इब्राहिम लोधी अपनी सभा (दरबार) के वयोवृद्ध सामन्तों के सम्मुख मसनद छोडकर उनके सम्मान में खड़ा हो जाया करता था। जियाउद्दीन बरनी ने उसकी भाईचारे की इस भावना की भूरि–भूरि प्रशंसा की है क्योंकि अफगानों में भी भारतीय जाटों या महाभारत के ज्ञातियों किंवा यादवों की ही भाँति रक्त–सम्बन्धों या भाईचारे के सहयोग और सहमति से ही सत्ता के संचालन की सुचारू प्रवश्त्ति थी। परन्तु फिर भी उन्होंने अपने शासन–प्रशासंन में भले ही हिन्दुओं के साथ भेदभाव भी नहीं किया था, परन्तु सत्ता संचालन में उनका सहयोग भी कहाँ लिया था। संभवतः वहीं उनकी असफलता का भी एकमात्र आधार बना होगा। असहमति और असहयोग एवं असहिष्णुता की राजनीति ही तो औरंगजेब की ही वर्तमान में भी विरासत बनी हुई है।

तुर्कों व खिलजियों तथा लोधियों के मुकाबले में मुगल बादशाहों की यह सबसे बडी विशेषता थी कि उन्होंने बाबरनाम

की शिक्षा के ही तो अनुरूप शासन–सत्ता में बहुसंख्यक हिन्दुओं को भी महत्व के पद प्रदान किए थे। यथा, बादशाह अकबर ने अपनी शाही सेना का सेनापति तक भी हिन्दू राजा मानसिंह मिर्जा को ही बनाया था। तो उनका मालमंत्री या वित्तमंत्री और राजस्वमंत्री भी एक हिन्दू राजा टोडरमल ही था। और तो क्या, औरंगजेब तक ने भी अपना सेनापति जयपुर के राजा जयसिंह को बनाया था और तो और काबुल को भारत में मिलाने के बाद उसका सूबेदार या राज्यपाल भी उसने बजाय एक मुस्लिम सरदार के जोधपुर के ही राठौर राजा जसवन्त सिंह को ही बनाया था। यह क्या कम उदारता और साम्प्रदायिक सौहार्द का प्रखर परिचय था।

(ग) सांझी संस्कृति और राष्ट्रीयता का विकास।

तमाम कमियों के बावजूद भी औरंगजेब के शासन–प्रशासन भी भ्रष्टाचार का नामोनिशान नहीं था। अनुशासन सर्वोपरि था और तो क्या अपने पुत्र अकबर–सुल्तान के विद्रोही बनने पर उसको भी अपना शेष जीवन उसको उकसाने वाले मराठाओं की ही शरण में बिताना पड़ा था। जो शाह जी भौंसले स्वयं भी बीसियों वर्ष पर्यन्त औरंगजेब की सेवा में सतत संलग्न रहा था, उसी ने बाद में बगावत का झंडा भी अनुकूल अवसर पाकर उठा लिया था। अतएव दक्षिण भारत तक भी उसका पीछा करके उसका दारुण दमन किया गया था।

लगातार 2 वर्ष पहले युवराज रहते और 25 वर्ष बाद में भी शहनशाह बनकर भी वही अकेला ऐसा सम्राट था कि जिसने निरन्तर बजाय राजमहलों के वस्त्र निर्मित तम्बुओं में ही अपना शेष जीवन दक्षिण भारत के खुश्क और गर्म मौसम में ही बिताया था। स्वयं युद्धाभियानों में भाग लेकर सेना का कुशल निर्देशन करना उसी के बूते की बात थी। हिन्दू–राजाओं जयसिंह और जसवन्तसिंह तथा रामसिंह सिसौदिया (मेवाड) और बूंदी के भी हाडा राजपूतों का सक्रिय सहयोग लेकर उसने एक सशक्त राष्ट्रीय सैन्यवाहिनी केन्द्र में खडी की थी। आमेर नरेश जयसिंह और जम्मू के राजा राजरूप के सैन्य सहयोग के बिना तो औरंगजेब दाराशिकोह को सत्ता–संघर्ष में हराकर सिंहासनारूढ ही नहीं हो सकता था।

मुगलों के द्वारा राजपूतों के साथ शादी ब्याह रचाने से जो रक्त मिश्रण और सांस्कृतिक समन्वय स्थापित हुआ था, वह भी हमारी साँझी राष्ट्रीय एकता को सदृढ बनाने वाला ही था। उसी से उपराष्ट्रीयताओं का संविलयन होकर हमारी साँझी कला व संस्कृति और राष्ट्रीय एकता का भी व्यापक विकास हुआ था। आज भले ही हिन्दू राष्ट्रवादी उस सब पर नाक भौं सुकेड लीं या फिर उससे मुँह चुराये परन्तु वह सब एक राष्ट्रीयता के निर्माणार्थ जरूरी था।

(घ) भारत सोने की चिडिया कब बना था।

तुर्कों और अफगानों एवं मुगलों के साथ ही साथ उनके अपने श्रम–शिल्पी दस्तकार और बुनकर तथा राजमिस्त्री भी तो आये ही थे। अतएव भारतवर्ष में कितने ही नये कला शिल्पों का भी व्यापक विकास हुआ था। खड्ग्डी के आने से वस्त्र बुनाई का उद्योग विश्वविख्यात हुआ था। ईरानी बेल–बूटों की कसीदाकारी के ही कारण भारत में निर्मित गर्म और रंगीन गलीचे पूरे ही अरब जगत और यूरोप महाद्वीप तक भी जाया करते थे। मधुबनी पेंटिग्स आखिर ईरानी चित्रकला की ही तो कलम है। मुगल और राजपूत एक साँझी चित्रकला का भी विपुल विकास हुआ ही था। हिन्दुस्तानी साज–संगीत का भी व्यापक राष्ट्रीय स्तर पर विकास हुआ था।

कृषिकार्य में ईरान से रहट (पार्सियन व्हील) के आने से चरस के स्थान पर कही अधिक कृषि क्षेत्र की सिंचाई संभव होने लगी थी। परिणामस्वरूप बढी हुई जनसंख्या के लिए खाद्यान्नों का उत्पादन भी बढ़ा ही था। नहरों और नदियों तथा राजमार्गो के निकट आ बाद नामक नगरों के बसने से भी भारत का वस्तु व्यापार बढा ही था। इरफान हवीब जैसे इतिहासकार मध्यकालीन उस मुगलकाल में ही एक आन्तरिक घरेलू बाजार के पर्याप्त विकास से ही एक व्यापारिक पूँजी का भी निर्माण होना मानते हैं। समाजवादी समालोचक और विचारक डॉ० रामविलास शर्मा भी इस विषय में उनसे सहमत रहे थे। मुगल काल में विश्व अर्थ–व्यवस्था में हमारी हिस्सेदारी एक चौथाई थी।

मेहराबदार अर्धचन्द्राकार एवं गोल गुम्बदों की स्थापत्य शैली मुगलकाल में ही विकसित हुई थी। वरना दक्षिण भारतीय मंदिरों का स्थापत्य शिल्प सीढीदार ही है। डॉटदार और अर्धचन्द्राकार मेहराबदार स्थापत्य शिल्प से ही बहुमंजिले भवनों और नदियों पर पुलों का भी निर्माण चूने से किया गया था जोकि अंग्रेजी शासन–काल तक भी चलते रहे थे। दिल्ली में बजीराबाद नाले पर निर्मित पुल तो आज पर्यन्त भी उसी स्थापत्य शिल्प का उत्कृष्ट निदर्शन है। भारत की अर्थव्यवस्था तभी विश्व में सिरमौर भी थी।

(ङ) विदेशी बिट्रिश साम्राज्यवादी शासन–सत्ता कैसी थी।

आगरे का ताजमहल जैसी उत्कृष्ट कलाकृक्तियाँ शान्ति एवं समृद्धि के काल की ही रचनाएँ हो सकती हैं। अंग्रेजी शासन–सत्ता के समय में भी भारतवर्ष में सार्वजनिक विद्यालय और चिकित्सालय भी खुले थे। रेलवे की लाईन बिछाकर सारे भारतवर्ष को एक परिवहन पथ ने भी एक कर दिया था। अंग्रेजो की भाषा में जो शिक्षा–ज्ञान विज्ञान की दी गई थी,

उसने भी हम भारतीयों को आधुनिक विश्व से जोड़ा है। विधि–व्यवस्था और संवैधानिक संस्थाओं के शनैः शनैः विकास ने भी तो हमें जनतांत्रिक व्यवस्था की ओर अनवरत उन्मुख किया था। वरना तो हम हजारों वर्षों से सामन्ती शोषण और दारुण दमन करने वाली व्यवस्था के शिकंजे में ही फंसे रहते।

आजकल हमारे तथाकथित सांस्कृतिक राष्ट्रवादी शासक लोग उन स्वनाम धन्य विदेशी परन्तु परोपकारी शासकों का भी नाम निशान मिटाने पर उतारू हैं। लॉर्ड मैकाले ने ही आधुनिक शिक्षा प्रणाली का प्रचलन करके यहाँ पर नूतन ज्ञान गवाक्ष खोला था, ये लोग उसी को अनवरत अकारण ही गरियाते रहते हैं। वरना आजकल सिलीकान वैली में हमारे सूचना प्रौद्योगिकी के स्नातक धूम नहीं मचा रहे होते। न ही वे तब प्रशासनिक अधिकारी प्रोफेसर या विधिवेता और इंजीनियर बन पाते। जिस लार्ड कर्जन को हम भारतीय वंग–भंग के लिए ही जानते हैं, क्या हम यह भी जानते हैं कि उसी ने १६०४ ई० में राष्ट्रीय शिक्षा अनुदान आयोग की स्थापना करके भारत में उच्च शिक्षा का विधिवत् शिलान्यास किया था। संभवतः हम भारतीयों को यह ज्ञात नहीं है कि लॉर्ड मिन्टों ने ही दिल्ली को नई दिल्ली से जोडने वाला रेल का पुल बनवाया था कि आजकल बस शिवाजी ब्रिज कहलाता है। मथुरा जंक्शन का निर्माण तो तत्कालीन अंग्रेज उपायुक्त मि० ग्राऊस ने अपने निजी व्यय से ही कराया था। जबकि अपने देशी शासक अपने–अपने राज्य क्षेत्रों में भी रेलवे लाईन बिछाने का व्यय–भार उठाने को उद्यत नहीं थे। अतएव आजकल हिन्दू राष्ट्रवाद के नाम पर उसी पुरातन या सनातन हिन्दू सामन्ती और मनुवादी राज्यों की स्थापना का ही तो षडयन्त्र पुनः रचाया जा रहा है।

जॉर्ज लॉयड ने फैसलाबाद (पाकिस्तान) में सर्वप्रथम कृषि कॉलेज की स्थापना लॉयलपुर में कराई थी। तभी नये–नये बीज और खाद कृषि क्षेत्र में औंध थे। रहटों और चरसों के स्थान पर नलकूपों की सिंचाई व्यवस्था बनाई गई थी। शक्खर में सिन्धु नदी पर बैराज बनाकर दसियों नहरों में उस जल का वितरण करके पंजाब और सिन्धु क्षेत्रों को हरा–भरा बनाकर अन्नापूर्णा देवी का अगम्य आगार बनाया गया था। तभी तो पंजाब प्रान्त कृषि व्यवस्था के विपुल विकास और हरित क्रांति के क्षेत्र में सबसे आगे था।

अंग्रेजी शासनकाल में ही वहाँ पर सर्वप्रथम किसानों की अपनी बहुमत से सरकार वायसराय की विधान परिषद् में भी गठित हुई थी। उसी ने सर्वप्रथम अन्न बिक्री के लिए मण्डी–सुधार सम्बन्धी नियम–विधान बनाये थे और किसानों को भी साहूकारी शोषणकारी महाजनी सूदखोर सभ्यता के ही शिकंजे से मुक्त कराया था। वहीं पर सर्वप्रथम किसानों को ऋणमुक्त भी विधिवत रूपेण घोषित किया गया था। तभी पंजाब ही देश में सर्वांगीण समुन्नति करके सिरमौर बना था। परन्तु इन सभी प्रगतिपरक वार्ताओं को भुलाकर केवल उसी मध्यकालीन सामन्ती और ब्राह्मणवादी शोषण और दमनकारी व्यवस्थाओं को ही पुनः अब हिन्दुत्व के नाम पर महिमामण्डित क्यों किया जा रहा है। यह सवर्ण हिन्दुओं का सांस्कृतिक षड्यन्त्र ही है।

जाटो की जाटों से नफरत

– चौधरी पृथ्वी सिंह बेधड़क

जाट का घर लूटकर – घर भरता है जाट
जाट को मारके––आप मरता है जाट,
सबसे ज्यादा जाट से ––झगडता है जाट,
सबसे ज्यादा जाट को–– रगड़ता है जाट।
कभी नहीं जाट का दुख–– हरता है जाट,
जाट का एहसान नहीं–– करता है जाट,
जाट की तरक्की सहन–– नहीं करता है जाट,
बंधुता का दम–– व्यर्थ भरता है जाट।
शांतिपूर्वक रहने से–– डरता है जाट,
जाटपन के कारण कभी–– नहीं उभरता है जाट,
सबसे ज्यादा जाट को ही ––दुख देता है जाट
और जाट से अवश्य–– बदला लेता है जाट।
जाटों के समझाने से–– नहीं मानता है जाट,
शत्रु अपना जाट को ही ––मानता है जाट,
वास्तविक रितु को नहीं–– पहचानता है जाट,
सदा अपनों से ही जंग–– ठानता है जाट।
जाट का नुकसान कर–– खुश होता है जाट,
जाट की राह में कांटे–– आप बोता है जाट,
मूछौं की लड़ाई में घर–– खोता है जाट,
कुरीतियों का बोझ––दोहता है जाट।
जाट के जगाने से नहीं–– जागता है जाट,
दारू मश्तक भोज –– नहीं त्यागता है जाट,
जाट के तो पास भी–– नहीं बैठता है जाट,
जाट को तो देखते ही–– ऐठता ध्रुठता है जाट।
राम जाने ऐसा क्यों–– करता है जाट।
यह कविता अमूमन जाट सोच का वर्णन है!!

वैवाहिक विज्ञापन

- *SM4 Jat Girl (DOB 13.10.98)27/5'3" B.Tech. (ECE) from Bharti Vidyapeeth College of Engineering Pune. Working as Software Engineer in I.T. Company, Pune. Father own business Medical shop in Faridabad. Mother housewife. Own house in Faridabad. Avoid Gotras: Malik, Lather, Dagar. Cont.: 9205378122*
- *SM4 Jat Girl (DOB Nov. 97) 27/5'3" M.Sc. Chemistry from Punjab University. Environment Management & Assessment Georgian College Canada. Working as Analytical Chemist at a Private Company in Toronto. Father ASI in Delhi police. Mother housewife. Avoid Gotras: Nandal, Rathi, Ghanghas, Khatri, Bajad. Cont.: 9050050072*
- *SM4 Jat Girl (DOB 11.08.99)26/5'7" B.Com. (Hons.) Christ University Banglore. Employed in BAIN & Company Gurugram. Salary 27 lakh per annum. Father Senior Manager in MNC at Banglore. Mother Teacher (HOD-Hindi) at Banglore. Brother B. Tech, Developer in MNC at Banglore. Preference: IIT/NIT/ Engineering Graduate/MBA/CA/Job in MNC. Avoid Gotras: Goyat, Saharan, Grewal. Cont.: 8168294936*
- *SM4 Jat Girl (DOB 07.07.93) 32/ 5'6" B. Com from Punjab University. MBA in Finance & IT from P.T.U. Father retired from Air Force, now serving in Haryana Agriculture Department Panchkula. Mother housewife. Family living in Zirakpur. Preferred match in Govt./Pvt. (MNC) job, or working in Foreign on PR/ citizenship & settled educated family living in Chandigarh, Panchkula, Kurukshetra, Mohali area, height minimum 5 feet 9 inches or above. Avoid Gotras: Ranwa, Dhaka, Bilewal. Cont.: 7896552697, 7888830645*
- *SM4 Jat Girl (DOB 06.02.92) 33/5'3" M.A. from Punjab University. B.Ed. Working as Teacher in a private school at Mohali. Father retired Inspector from Chandigarh Police. Family settled at Chandigarh. Avoid Gotras: Nain, Sangwan, Dhaliwal, Panghal. Cont.: 8699726944, 7837908258*
- *SM4 Jat Girl (DOB 23.06.2000) 25/5'1" B. Com. from Delhi University. B.Ed. from Ch. Charan Singh University Meerut. Father occupation Business. Avoid Gotras: Lakra, Malik. Cont.: 9216000072*
- *SM4 Jat Girl (DOB 1990) 35/5'8" Convent educated. Post Graduate from Punjab University Chandigarh. Employed in International School at Chandigarh. Well educated in urban petting. Avoid Gotras: Malik, Sura. Cont.: 9465448508*
- *SM4 Jat Girl (DOB 28.02.93) 31/5feet. B. Tech. in Computer Science, Diploma in Computer Science, M. Tech. in Software Engineering. Working in reputed MNC at Chandigarh. Salary Rs. 8 LPA. Father retired Divisional Head Draftsman from Haryana government. Mother housewife. Family settled at Panchkula. Avoid Gotras: Malik, Deswal, Sheoran. Cont.: 9417333298*
- *SM4 Jat Girl (DOB 31.01.95) 28/5'1" B.Sc., M.Sc. (Botany). UGC, NET qualified. Ph.D in Botany from P. U. Chandigarh. Employed as Assistant Professor in College at Karnal on contract basis. Selected as Assistant Professor in Government college through HPSC, joining awaited. Father retired from Defence. Mother housewife. Family settled at Ambala Cantt (Haryana). Avoid Gotras: Rathi, Kharb, Rana. Cont.: 9812238950*
- *SM4 Jat Girl (DOB 01.10.94) 31/5ft. MBA. Father and mother in Government service. Avoid Gotras: Hooda, Lakra, Dalal. Cont.: 8283000022*
- *SM4 Jat Girl 5'5"/09.10.1998, Msc Maths, Job Preparation, Avoid Gotra: Hooda Sahrawat Chhikara, Cont.: 9416360479*
- *SM4 Jat Girl 5'3"/22.06.1997, Bsc Nursing, "Nursing officer PGI CHANDIGARH permanent", Avoid Gotra: "Bhanwala, MOR,Khatkar(optional)", Cont.: 9417579207*
- *SM4 Jat Girl 5'2.5"/01.02.1992, Masters in Mass communication. NET qualified twice. pursuing PHD, 4 yrs experience as Assistant Professor. currently not working., Avoid Gotra: Dahiya panwar Malik (Dadi) Rathi Gulia(direct), Cont.: 9896021171, 8295632444*
- *SM4 Jat Girl 5'3"/19.03.1994, M.COM, Preparing for UGC NET JRF, Avoid Gotra: Kharb, Bhanwala, Kadiyan, Cont.: 9417132559*
- *SM4 Jat Girl 5'5"/02.07.1998, Btech (Computer Science), "Senior Associate Consultant (Infosys)", Avoid Gotra: Jakhar, Sheoran, Beniwal, Cont.: 7015791824*
- *SM4 Jat Girl 5'2"/01.10.1993, MA B.Ed. CTET HTET, JBT in Punjab, near Chandigarh, Avoid Gotra: Sangwan, Phogat, Pilania, Cont.: 9416869289*
- *SM4 Jat Girl 5'7"/16.01.1998, BA B.Ed MA CTET, Pursuing MA, Avoid Gotra: Rajan, Dalal, Nara, Cont.: 9467088663*
- *SM4 Jat Girl 5'5"/16.09.1999, MA CTET, "Job preparation (UPSC (2 Attempts))", Avoid Gotra: Dahiya Suhag, Dalal, Cont.: 9896083353*
- *SM4 Jat Girl 5'5"/12.03.1995, "B.Sc, MBA, PhD in Agribusiness Management", Job Preparation, Avoid Gotra: Sangwan, Kaliramana, Sihmar, Cont.: 9468364940, 8295950401*
- *SM4 Jat Girl 5'5"/27.09.1995, MBBS, Pursuing MD, Avoid Gotra: Berwal, Siwach, Lohach, Cont.: 9991199441*
- *SM4 Jat Girl 5'5"/13.09.1996, MBA, MBBS, PG- MD (1st Year), Avoid Gotra: Pawar, Phogat, Kharb, Raparia, Cont.: 9416537945*
- *SM4 Jat Girl 5'2"/28.01.1996, BA, JBT, Admin Dept-WAPCOS (PSU), Avoid Gotra: Nehra, Sangwan, Poonia, Cont.: 9815219007*
- *SM4 Jat Girl 5'6"/05.09.1997, B.Sc., M.Sc., Pursuing PhD, Physics, Avoid Gotra: Gill, Kataria, Dhattarwal, Cont.: 9416517252*
- *SM4 Jat Girl 5'7"/11.08.1999, B.Com., BAIN &Company. Gurgaon, Avoid Gotra: Goyat, Saharan, Grewal, Cont.: 8168294936*
- *SM4 Jat Girl 5'5"/ 29 years, BA, Advance Computer Course, "pursing pro motion graphic course", Avoid Gotra: Ahlawat, Pannu, Sangwan., Cont.: 7027768300*
- *SM4 Jat Girl 5'5"/October 15, 1990, B. Com, MS Finance, "Worked in various countries, Currently looking for new", Avoid Gotra: Dhanda, Mahiya, Punia, Cont.: 7087399900*

- SM4 Jat Girl 5'3"/01.09.1996, B.Com, M.Com, NET, Civil Services Preparation, Avoid Gotra: Chahal, Dagar, Dhull, Cont.: 9896290431
- SM4 Jat Girl 5'3/01.11.1994, "CTET(Level -1,2), AWES (TGT, PGT)", Teacher in DAVPPS Panchkula, Avoid Gotra: "Redhu, Bhambhu, Godara, Sinwer", Cont.: 7837315175
- SM4 Jat Girl 5'3"/26.10.2002, BA, B.Ed., Pursuing MA, Preparation for UPSC, SSC, Avoid Gotra: Rana, sheoran,mathur, Cont.: 8288851704, 8288800000
- SM4 Jat Girl 5'6"/04.08.1995, BA ,MA, NET, Pursuing B.Ed, Preparing for CSE, Avoid Gotra: Ahlawat, Nandal, Dhankhar, Cont.: 7988647715
- SM4 Jat Girl 5'4"/25.07.1997, "B.Sc, M.Sc., B.Ed, Ctet (Level 1,2), PhD", "looking for Assistant Professor job in college", Avoid Gotra: Attan, Lambre, Saraan, Cont.: 9416343946
- SM4 Jat Girl 5'6"/09.04.1993, MBBS, "Senior Resident, Safdarjung Hospital New Delhi", Avoid Gotra: Barak, Khatri,Ohlan, Cont.: 8851732076, 7838447778
- SM4 Jat Girl 5'4"/29.08.1997, MBBS, MD, "SR at Government hospital, Chd", Avoid Gotra: Boora, Soora, Rangi, Cont.: 9464955434, 9530670308
- SM4 Jat Girl 5'3''/22.05.1991, "B.tech,M.tech, P.hd in Thermal Engineering", , Avoid Gotra: Sandhu, Siwach, Gill ,Sheoran, Cont.: 94669-65902, 98133-66793
- SM4 Jat Girl 5'4''/25.11.1994, "Pursuing part-time Phd in Electrical Engineering", "Technical officer in N.I.T. kurukshetra", Avoid Gotra: Sandhu, Siwach, Gill ,Sheoran, Cont.: 94669-65902, 98133-66793
- SM4 Jat Girl 5'3"/23.11.1991, "B. Sc (Non- Med), B.Ed., M.Sc Physics", "Deputy Manager (State Bank of India)", Avoid Gotra: Sungroya, Nain, Kaliramana, Cont.: 9466569366
- SM4 Jat Girl 5'5"/02.09.1990, MBA, Dy. Collector Irrigation deptt), Avoid Gotra: Kadyan,Hooda, Sangwan, Cont.: 9468269712, 8708545120
- SM4 Jat Girl 5'8"/31.12.2000, MA (Public Adminstration), , Avoid Gotra: Saharan,Nain and Sheokand, Cont.: 9811481117, 8708185070
- SM4 Jat Girl 5'6"/18.06.1986, LLB, "working with Karnataka Govt. Child Welfare Committee", Avoid Gotra: Tewatia, Rathi, Cont.: 9958918809
- SM4 Jat Girl 5'9"/01.10.1997, BTech, MBA, Working, Avoid Gotra: Bargoti, Tomar, Sirohi, Sininwar, Cont.: 9970968772
- SM4 Jat Girl 5'2"/07.09.1987, "M.sc forensic science, NET pass, Ph.d forensic science", "Asst. Professor forensic science (regular)- LPU", Avoid Gotra: Malik, Khatri, Chillar, Cont.: 9466531298
- SM4 Jat Girl 5'4"/01.12.1994, M.Sc Biotech B.Ed., "Drug Analyst in Bio-Pharma MNC Banglore", Avoid Gotra: Malik, Dhankar, Rana, Sheoran, Cont.: 9888553347
- SM4 Jat Girl 5'7"/17.09.1997, Pursuing MD Paediatric, Avoid Gotra: Malik, Chikkara, Dhankar, Cont.: 9466420348
- SM4 Jat Girl 5'4"/24.08.1993, MBBS MD(pathology), Asst. Professor, Bikaner, Avoid Gotra: Baloda, Tomar, Taksak, Cont.: 7878020395
- SM4 Jat Girl 5'/07.12.1993, B.Tech Textile IIT Delhi, MBA, "OLA as Program Manager, Banglore", Avoid Gotra: Gulia, Balyan, Khadaiya, Cont.: 9822613884
- SM4 Jat Girl 5'1'/08.08.1997, B.Tech. PEC Chandigarh, MNC Banglore, Avoid Gotra: Malik, Phogat, Dhankar, Cont.: 9463962490
- SM4 Jat Girl 5'5"/05.04.1996, D.El.Ed. MA English DCA, -, Avoid Gotra: Dalal, Dhull, Berwal, Cont.: 9416417074
- SM4 Jat Girl 5'7"/06.09.1996, B.Tech MBA, "Infosys as Management Consultant", Avoid Gotra: Pilania, Tomar, Cont.: 9899234778
- SM4 Jat Girl 5'3"/27.06.2000, B.A. M.A. English MBA B.Lib., -, Avoid Gotra: Dhankar, Sahu, Balhara, Cont.: 9468009871
- SM4 Jat Girl 5'5"/25.10.1991, M.Sc. Elec Engg, Software Engg., Avoid Gotra: Siyag, Mahiya, Cont.: 00491705958298
- SM4 Jat Girl 5'3"/20.12.1992, B.A. JBT ANM, "Staff Nurse, GH Delhi, (Contract)", Avoid Gotra: Birhman, Dalal, Kadyan, Cont.: 9896988225
- SM4 Jat Girl 5'5"/15.11.1990, Msc maths, MCA, TCS, Avoid Gotra: Malik, Shoeran, Sihag, Cont.: 8178147590
- SM4 Jat Girl 5'3"/23.04.1990, BBA MBA B.Ed., Teaching, Avoid Gotra: Khatri, Dabas, Chikkara, Cont.: 9968367205
- SM4 Jat Girl 5'3/18.07.1998, Bachelor in physiotherpay, Physiotherapist in private hospital in Chandigarh, Avoid Gotra: Gulia, badak, barhmaan, Cont.: 8570849277
- SM4 Jat Girl 5'5''/30.09.1990, "Ph.D., M.Tech(CSE), B.Tech(CSE), GATE & UGC NET Qualified", Assistant Professor, Avoid Gotra: Malik, Saharan, Dhull (Girl is Issueless Divorcee), Cont.: 9872415151
- SM4 Jat Girl 5'4"/05.10.2002, "B Tech (Aerospace) PEC Chandigarh", "Working as Startegic Designer with AIRBUS", Avoid Gotra: Rathee, Sheokand, Budhwar, Cont.: 9876015727
- SM4 Jat Girl 5'4"/08.03.2001, Pursuing PHD in Psychology, "Counseling & Assignment project, 24 lac Annually earning", Avoid Gotra: Beniwal and Kukna, Cont.: 9871409991
- SM4 Jat Girl 5'2"/07.09.1997, Ph.D. Biochemistry (pursuing), Student, Avoid Gotra: Sandhu, Lathwal, Gulia, Cont.: 9464259378
- SM4 Jat Girl 5'6"/09.12.1996, MBBS, MD, Doctor, Avoid Gotra: Gahlawat, Nandal, dahiya, Cont.: 9466712547
- SM4 Jat Girl 5'2"/24.08.1998, "BSc Medical MA Human Rights B.Ed.", Pursuing PhD Women Studies, Avoid Gotra: Jyani, Jandu, Sai/Hardu, Cont.: 9306172929
- SM4 Jat Girl 5'7"/18.08.1997, BSc B.Ed. MSc, Pursuing PhD, Avoid Gotra: Goyat, Dangi, Tomar, Chahal, Cont.: 9992330980
- SM4 Jat Boy 26/6'1" preferable in teaching profession at ChdèPkl, M.A., B.P.Ed employed as Sub Inspector in Punjab Police, Mohali. Parents Haryana Govt. employees and settled in Rohtak. Avoid Gotra: Dahiya, Dangi, Bhanwala & Sangwan. Cont.: 9466702703, 8826196133
- SM4 Jat Boy 25/6'1" currently working in Energy Co. Bangolore (PA-6 Lacks), B.Com. (Hons), IPSC to MBA (HR) (JAGSOM) Bangalore. One sister doing B.Sc (Math), DU. Gotras: Dabas, Pahal, Mann. Cont.: 9818111192

जुबान और दिमाग ज्यादा तेज चलने से रिश्तों की रफ्तार कम हो जाती है।

- SM4 Jat Boy (DOB 21.08.95) 30/5'9". Employed as Senior Digital Marketing Specialist. Income Rs. 6 lakh PA also doing free lancing. Father retired Government employee. Mother housewife. Avoid Gotras: Dabas, Sangwan, Dhankad. Cont.: 7508929045, 9779132009
- SM4 Jat Boy (DOB 18.01.95) 30/5'9". B. Tech. ECE. Self employed. Income Rs. 18 LPA. Father Under Secretary retired from Haryana Government. Mother housewife. Family settled at Nayagaon (Punjab). Two acre agriculture land. Avoid Gotras: Dhariwal, Rathi, Grewal. Cont.: 9888083645, 9915658166
- SM4 Jat Boy (DOB 21.08.97) 28/6ft. B. Tech. in Mechanical Engineering from MDU Rohtak. PG in Supply Chain Management Northern College Toronto. Working at Fastenal Canada in Supply Chain. Father retired Inspector from Haryana Police. Avoid Gotras: Tomar, Sindhu, Dhalan. Cont.: 9996611677, 9996634677
- SM4 Jat Boy (DOB July 97) 28/5'11" B. Tech. from IIT. Employed as Inspector in GST & Custom. Father Assistant Manager in Bank, Air Force veteran. Residential house in Kurukshetra. Avoid Gotras: Ola, Goyat, Sheoran. Cont.: 9802076149
- SM4 Jat Boy (DOB 24.08.98) 27/5'11" B. Tech. Civil Engineering from PEC Chandigarh. M. Tech. Structure Engineering from IIT Roorkee. Employed as Scientific Officer Nuclear Power Corporation, Mumbai, Department of Atomic Energy. Father Deputy General Manager in HMT Pinjore (Haryana). Mother PGT in Haryana Government. Elder sister PhD. from IITD, working as Assistant Professor in IIT & married. Preferred well educated family with moral values, non alcoholic, non-smoker and vegetarian. Avoid Gotras: Malik, Mor, Sandhu. Cont.: 8295227699
- SM4 Divorced Jat Boy (DOB 06.08.93) 32/ 6feet. B.A. Employed as Store Keeper in Tata Motors. Three ace agriculture land. Avoid Gotras: Aujla, Lalar, Baisaiti. Cont.: 9416460301, 9468233366
- SM4 Jat Boy (DOB 02.06.99) 26/ 6feet. 12th passed. Employed as Senior T.T. in Indian Railway at Ratlam (M.P.) National Gold Medalist in Wrestling. Two ace agriculture land. Avoid Gotras: Dalal, Jakhar, Phaugat. Cont.: 9050258654
- SM4 Jat Boy (DOB 24.09.95) 30/ 6'1" B. Tech in E.C.E. MBA in Creative Business Management from U. K. (London). Presently working in private sector at Zirakpur, (Mohali. Punjab). Father retired from Air Force, now serving in Haryana Agriculture Department Panchkula. Mother housewife. Family living in Zirakpur. Preferred well educated, working in Govt./Pvt (MNC) Sector of well settled family. Height above 5,5". Avoid Gotras: Ranwa, Dhaka, Bilewal. Cont.: 7896552697, 7888830647
- SM4 Jat Boy (DOB September 94) 31/ 5'9" Government job in Post office Panchkula. Avoid Gotras: Dhayal, Poonia, Phogat. Cont.: 9416270513, 9996611722
- SM4 Jat Boy (DOB 06.11.98) 26/5'9" B.Com. Diploma in Computer Horton. Own business of mobile repair. Family settled at Panchkula. Avoid Gotras: Barak, Dalal, Kadyan. Cont.: 8146229865, 9877552019
- SM4 Jat Boy (DOB 21.11.97) 27/ 6feet. B. Tech CSE. Employed as Senior Software Engineer in a reputed MNC at Banglore with salary package of Rs. 60 LAP. Parents retired Class-I officers from Haryana Government and settled at Panchkula. Avoid Gotras: Khokhar, Gurawalia, Mor. Contact:9878768027
- SM4 Jat Boy (DOB 11.03.94) 31/5'8" Architect by profession. Well educated urban family. Avoid Gotras: Khatkar, Malik. Cont.: 9888626559
- SM4 Jat Boy (DOB 14.06.95) 30/6'2". MBA (Fore School of Management Delhi). B. Tech. Mechanical (VIT Vellore). Employed in MNC with package Rs. 15 lac per annum. Father's banking profession. Mother housewife. Avoid Gotras: Mor, Sheoran. Cont.: 8575000593
- SM4 Jat Boy (DOB 27.09.95) 29/5'9". MBBS & PG Pediatrics. Service as HCMS MO. Salary Rs. 12-15 LPA. Father Sub-Inspector in Haryana Police. Mother housewife. Avoid Gotras: Phaugat, Gill, Dahiya. Cont.: 9812011590
- SM4 Jat Boy (DOB May 1999) 26/5'7" B. Tech from PEC Chandigarh. Employed as Software Engineer in reputed company at Banglore with package of Rs. 60 lakh per year. Father in Government job at Chandigarh. Mother housewife. Younger brother pursuing B. Tech. Avoid Gotras: Seniwal, Budania, Jhajhra. Cont.: 9417317416
- SM4 Jat Boy (DOB 07.06.91) 33/5'6" B. Tech (IT). M. Tech, Cyber Security Macquarie University Sydney, Australia. Working as Network Engineer at HSC Gurugram (work from home). Has Canada Ontario PR-willing to move to Canada. Income 60000-PM. Family income Rs. 30-35 LPA. Father Advocate & notary. Mother PGT, Haryana Government school. Family settled at Panchkula. Avoid Gotras: Pannu, Phor, Malik. Cont.: 9888727222, 9877885365
- SM4 Jat Boy (DOB 20.10.92) 32/5'5" Graduate. Doing private job. Father retired from Haryana government. Mother in private job. Own house at Chandigarh. Avoid Gotras: Lamba, Nandal, Ghalyan. Cont.: 7696771747
- SM4 Jat Boy (DOB 09.09.97) 27/ 6feet. B. Tech (Computer Science). M.B.A. employed as Software Engineer in Rocket Software Pune with package Rs. 22.5 LPA (work from home). Father retired Supervisor form HMT Pinjore (Haryana). Mother housewife. Own house in Pinjore. Own coaching institute at Pinjore with income of Rs. 31 lakh PA. Avoid Gotras: Bankura, Mann, Narwal. Cont.: 9354839881
- SM4 Jat Boy (DOB 28.06.96) 28/ 6 feet. MCA. Working in IT at Chandigarh location. Income Rs. 14 LPA. Father Sub Inspector in Chandigarh Police. Mother housewife. Family settled at Panchkula. Avoid Gotras: Sihag, Lather, Redhu, Khatkar. Cont.: 9417862853
- SM4 Jat Boy 5'10"/11.02.1998, Bsc,MA sociology, "Sub Inspector PANJAB Police (Chandigarh)", Avoid Gotra: Bhanwala, MOR, Khatkar (optional), Cont.: 9417579207
- SM4 Jat Boy 5'3"/01.01.1995, 10+2, Contreturs, Avoid Gotra: ...., Cont.: 8700616172
- SM4 Jat Boy 5'2.5"/27.06.1982, M.Sc Seed technology, Sale's and marketing, Avoid Gotra: Piple, Cont.: 9915757464
- SM4 Jat Boy 5'3"/03.07.2000, Bsc MCA, Chandigarh police (IT wing), Avoid Gotra: Sangwan, Ahlawat, janghu, Cont.: 9718720065
- SM4 Jat Boy 5'10"/05.10.1999, "12 th PCM -BA and MA DELHI

UNIVERSITY", Haryana police constable, Avoid Gotra: Sangwan, Ahlawat,janghu, Cont.: 9718720065

- *SM4 Jat Boy 5'11'/27.05.1999, Bvoc (Hardware & Networking PU Chandigarh)Persuing CMT, Equity Market (Family portfolios), Avoid Gotra: KADIAN, Dabbas, Dhauchak, Cont.: 9915730066*
- *SM4 Jat Boy 5'8"/18.07.1994, Diploma in civil engineering, Working in HKRN (under job security), Avoid Gotra: Payal,Phogat, tomar,sulakh, Cont.: 8901010691*
- *SM4 Jat Boy 5'10"/28.09.1995, M.A. Sociology, "Clerk, Ministry of Education, Govt. of India", Avoid Gotra: Sheokand, Balam, Malik, Mor, Cont.: 9417628775*
- *SM4 Jat Boy 6'0"/06.08.1993, B.A., Store keeper in tata motor, Avoid Gotra: aujala, laller, baisaiti, Cont.: 9468233366*
- *SM4 Jat Boy 5'6"/05.06.1987, B.A., "constable in dept of atomic energy(central govt)", Avoid Gotra: sangwan, kundu, bhanwala, malik, ohlyan, Cont.: 7073715188*
- *SM4 Jat Boy /18.03.1997, MSc Engg physics, "assistant manager, central bank of india", Avoid Gotra: dhanda, Cont.: 9416622087*
- *SM4 Jat Boy 6"3/02.03.1997, B.tech (mechanical), Private job (Employee of Tele performance Mohali,), Avoid Gotra: Malik, Dahiya,Narwhal, Cont.: 9467817714*
- *SM4 Jat Boy 5'8"/06.06.1994, MBA, "Operation Manager, Awign Enterprise, Banglore", Avoid Gotra: sihmar, khatri, mor, Cont.: 9466612947*
- *SM4 Jat Boy /07.04.1996, B.A, B.Ed, CTET, LDC in PGIMER, Chandigarh, Avoid Gotra: Antil, Dahiya, Rana, Cont.: "9466701031, 8053280962"*
- *SM4 Jat Boy 5'9"/15.10.1994, B.Tech M.Tech, engg in sydney, Avoid Gotra: Chahal, Nain, Maan, Cont.: 9253300006*
- *SM4 Jat Boy 5'11"/28.07.1998, "PG in Construction Managament, NICMAR", "gawar construction company, gurugram", Avoid Gotra: Beniwal, Punia, Mehla, Cont.: 9812022726*
- *SM4 Jat Boy 5'11"/22.12.1996, LLB LLM, pursing PhD, Avoid Gotra: Gahlawat, Dalal, Sehrawat, Cont.: 9416400514*
- *SM4 Jat Boy 6'/28.09.1996, BA LLB, Lawyer in Punjab Haryan High Court, Avoid Gotra: Punia, Dahiya, Naru, Cont.: 9215326687*
- *SM4 Jat Boy 6'/26.10.1998, B.Sc., "Postal Assistant in O/o The Chief Postmaster General Office", Avoid Gotra: Dhayal, Daadi-Panwar, Sura, Cont.: 9812436300*
- *SM4 Jat Boy 6'/09.09.1997, B.Tech, MBA, "Software Engineer (Rocket Software)", Avoid Gotra: Bankura, Maan, Narwal, Cont.: 9354839881*
- *SM4 Jat Boy 5'8"/11.02.1996, BA Hons (Political Science), ASO DASS (Grade II), Avoid Gotra: Jakhar, Suhag, Phogat, Cont.: 9599996500, 8010996500*
- *SM4 Jat Boy 5'9"/10.02.1995, B.Sc. Physics, "Clerk in Punjab & Haryana High Court", Avoid Gotra: Chhikara, Rana, Sehrawat, Cont.: 9910404062, 7982271964*
- *SM4 Jat Boy 5' 11"/12.05.1995, M.B.A., Manager, Avoid Gotra: Lather, Dhanda, Sehrawat, Cont.: 9780938578*
- *SM4 Jat Boy 5'9"/27.09.1995, MBBS, HCMS MO, Avoid Gotra: phougat, Gill, Cont.: 9812011590*
- *SM4 Jat Boy 5'8"/03.03.1195, BA,ITI,* हरियाणा कौशल रोजगार योजना में जल विभाग में कार्यरत है। *Avoid Gotra: Beniwal, Palthania, Sihag, Saharan, Cont.: 9996850267*
- *SM4 Jat Boy 5'10"/09.10.1995, B.Tech, CET, "Job Preparation, Starting own business", Avoid Gotra: Thakran, Lour, Dhankar, Cont.: 9728847111, 8221072570*
- *SM4 Jat Boy 5'11"/22.03.1997, MJMC, "JSA, Ministry of Education (New Delhi)", Avoid Gotra: Bamal, Dhankhar, Malik, Cont.: 8607214434*
- *SM4 Jat Boy /24.08.1998, B.Tech, M.Tech, "Scientific Officer D (Executive Engineer) in Nuclear Power", Avoid Gotra: Malik, Mor, Sandhu, Cont.: 8295227699*
- *SM4 Jat Boy 5'9"/21.08.1995, Digital marketer, Avoid Gotra: Dabas,Sangwan,Dhankad, Cont.: "7508929045, 9779100000"*
- *SM4 Jat Boy 6'/15.02.2000, "BBA, MBA and Perusing Master's-Structural Engg &", "Post Office Queensland-Brisbane Australia and currently obtained on", Avoid Gotra: Bedhian, Dhanda & Sandhu, Cont.: 9899985030*
- *SM4 Jat Boy 5'4"/4.03.1988, M.Com., FORHEX Association at Jaipur, Avoid Gotra: Beniwal, Bhagor, Kuntal, Sikarwar, Cont.: 9664118090, 9785561678*
- *SM4 Jat Boy 5'11"/25.03.1995, "B.Sc, M.Sc, B.Ed, Coding, Business Analysis, Data Science", "Tutor & Proctor (US based clients) at Trivium (Delhi)", Avoid Gotra: Sangwan, Pawariya, Phogat,Gajraj, Cont.: 9991666839, 8053600113*
- *SM4 Jat Boy 5'9"/19.07.1996, "B Design, M Design and Pursuing PhD", Assistant Professor In Design, Avoid Gotra: Kadian, Kuhar, Nandal, Cont.: 9416226604*
- *SM4 Jat Boy 5'7"/12.09.1997, B.Tech, Service in IT Sector, Avoid Gotra: Hooda, Ahlawat & Siwach, Cont.: 8360153519, 7696046215*
- *SM4 Jat Boy 5'8"/29.09.1991, 10th, Car Driver, Avoid Gotra: Chillar, Thakran, Gulia, Cont.: 7988606517*
- *SM4 Jat Boy 5'9"/06.11.1998, BA, MA, D. Pharmacy, Pharmacy Shop, Avoid Gotra: Phougat, Rana, Tehlan, Cont.: 9306403477*
- *SM4 Jat Boy 5'8"/15.04.1995, B.com, Working as CA, Avoid Gotra: Dhanda, Narwal, Dalal, Cont.: 7696525051, 7347251964*
- *SM4 Jat Boy 5'10"/04.10.1992, "PG Diploma in Project Management and Global", "Residential Rehabilitation Worker (RRW) at Kings Regional", Avoid Gotra: Sindher (Sindhu), Gahlyan, Dahiya., Cont.: 9541836000*
- *SM4 Jat Boy 5'9"/23.01.1998, B.Tech, M.Tech, "instructor at engineering college Arkansas State University USA", Avoid Gotra: Dhariwal, Sangwan, Malik, Cont.: 9315343029*
- *SM4 Jat Boy 6'3"/April 16, 1992, "Masters in Civil Engineering from Australia", Civil engineer in Melbourne, Avoid Gotra: Phore, Jajain, Cont.: 9891026857, 8527625029*
- *SM4 Jat Boy 5'11"/24.02.1994, B.Arch, MSc, "Project Management in an MNC, Belfast, UK", Avoid Gotra: Pawar, Phogat, Dahiya, Rapriya, Cont.: 9873240444*
- *SM4 Jat Boy 5' 10"/14.04.1995, Preparing for officer Rank,*

Merchant navy in bosun rank, Avoid Gotra: Panghal,Banger, Cont.: 9682598271

- SM4 Jat Boy 5'8"/13.08.1997, BSc (Medical), Job: Haryana Police, Avoid Gotra: Narwal, Dalal & Dhochak, Cont.: 9812799590
- SM4 Jat Boy 6'/03.12.1999, BA, Librarian diploma, LLB, "Currently lawyer at Delhi High Court & Dwarka Session Court", Avoid Gotra: Joon,Rathi,Kadyan, Sehrawat, Cont.: 9013231210
- SM4 Jat Boy 5'8"/23.07.1991, Private job, Avoid Gotra: Kajal, Phougat, Shouran, Cont.: 9518295650
- SM4 Jat Boy 5'5"/26.12.1992, BA, Fatehbad Central Cooperative Bank, Avoid Gotra: Chabarwal, Bijariyan, Mehla, Cont.: 9671390024
- SM4 Jat Boy 5'7"/31.12.1980, 8th, Avoid Gotra: Sehrawat, Kundu, Cont.: 9914444101
- SM4 Jat Boy 5'8"/17.07.2002, B. L.Ed., Avoid Gotra: Dhankar, Ujjwal, Jat Rana, Cont.: 9358432315
- SM4 Jat Boy 6'/23.07.1992, "M.B.B.S Raj., MD RADIOLOGY (JR-2) Raj.", Avoid Gotra: Rathee, Dhankhar, Sangwan, Cont.: 9822613884
- SM4 Jat Boy 6'2"/01.04.1994, MBBS, medical officer in Army, Avoid Gotra: Deshwal, Malik, Cont.: 8527854110, 7835947507
- SM4 Jat Boy 5'9"/01.07.1994, "Diploma in polytechnic B.A., MBA", "Ministry of Defence, Dept. CSD, LDC (SSC CHSL 2018)", Avoid Gotra: Lohchab, Mor, Hooda, Cont.: 9467277543
- SM4 Jat Boy /15.11.1996, ITI, "Business – Stock, Cement Agency, Building material, etc, Avoid Gotra: Jat Rana, Chanda Rana, Lohchab, Cont.: 9467277543
- SM4 Jat Boy 6'6"/23.11.1999, ITI Diploma, self-business, preparation for job, Avoid Gotra: Hooda Ahlawat (Dahiya optional), Cont.: 9466825182
- SM4 Jat Boy 5'9"/15.11.1999, BA, Farming, Avoid Gotra: Siwatch, Tomar, Sangwan, Cont.: 9812195780
- SM4 Jat Boy 5'11"/11.05.1998, "B.Com Diploma in fabric designing", "Assistant manager, HP Singh Pvt. Ltd.", Avoid Gotra: Rajora, Cont.: 9958926968
- SM4 Jat Boy 5'5"/16.01.1996, 10+2, ITI, Farmer, Avoid Gotra: Bhangu, Kandola, Kale, Cont.: 9416383868
- SM4 Jat Boy /23.02.1992, "Graduate with Computer knowledge", Driver, Avoid Gotra:, Cont.: 9466848989
- SM4 Jat Boy 6'/04.01.1992, MBBS, Private job, Avoid Gotra: Nain Sheokand Saharan, Cont.: 9416547418
- SM4 Jat Boy 6'1"/15.01.1999, B.Com, MBA(Hons), "Sr. Sale Executive at HDFC Bank Rohtak", Avoid Gotra: Malik Ruhil Gulia, Cont.: 9015694110
- SM4 Jat Boy 5'11"/30.07.2000, 10+2, ITI, Constable in Haryana Police, Avoid Gotra: Mor, Malik,Dhanda Other Khasa, Cont.: 9812970237
- SM4 Jat Boy 5'11"/16.11.1995, "10+2, CV PU Chd Hotel Management", In IT Sector Chandigarh, Avoid Gotra: Dej, Pawar, Mohan, Cont.: 9466636486
- SM4 Jat Boy 6'/07.01.1994, MSc Math, B.Ed, "Coaching in Private Institute at Chandigarh, Panchkula", Avoid Gotra: Kharta, Mann, Dhanda, Cont.: 8847341307
- SM4 Jat Boy 6'/10.12.1992, B.Tech., J.E. CPWD Delhi, Avoid Gotra: Baloda, Tomar, Taksak, Cont.: 7878020395
- SM4 Jat Boy 6'/17.06.1998, B.Sc. B.Tech., Army Officer, Avoid Gotra: Laller, Dargash, Gatyan, Cont.: 9872001216
- SM4 Jat Boy 5'10"/14.03.2002, B.A., "Fireman, Army Ordinance Fire Brigade, Pune", Avoid Gotra: Kulhdia, Sangwan, Lohan, Cont.: 9416975059
- SM4 Jat Boy 5'7"/02.08.1995, B.Tech, Mobile Shop, Avoid Gotra: Sindhu, Hooda, Jakhar, Cont.: 9050476900
- SM4 Jat Boy 5'6"/03.07.1995, B.C.A, Software Engg. IT Park Chandigarh, Avoid Gotra: Sidhu, Ghuman, Khubbar, Cont.: 9815728211
- SM4 Jat Boy 5'11/08.10.1997, Bachelor in art, Job in haryana police, Avoid Gotra: Gulia, badak, barhmaan, Cont.: 8570849277
- SM4 Jat Boy 5'8/29.05.1997, Master in english, pol science, Private teacher (a good score in DSSB PGT) result awaited, Avoid Gotra: Gulia, Badak, Barhman, Cont.: 8570849277
- SM4 Jat Boy 5'8/19.10.1989, B.tech (CSE), "Clerical work in HBCH&CH, New Chandigarh", Avoid Gotra: Antil, Malik, Dahiya, Cont.: 9815878952
- SM4 Jat Boy 5'10"/08.04.1994, Master of Technology in Mechanical Engineering, Senior Engineer, Avoid Gotra: Sangwan, Lathwal & Lakra, Cont.: 7837613988
- SM4 Jat Boy 6"/29.08.1998, B. Tech in Civil Engg., "Currently Pursuing Master's from Canadian University", Avoid Gotra: Dhankhar, Nandal, Hooda, Cont.: 7087995856
- SM4 Jat Boy 5'7"/02.02.1993, Graduation, Self-employed, Avoid Gotra: Sheokand, Malik Dhull, Cont.: 9417778763
- SM4 Jat Boy 6'/18.05.1997, Graduate, Farming, Avoid Gotra: Gulia,Dahiya, Ahlawat, Cont.: 9812825525
- SM4 Jat Boy 5'7"/03.05.1995, Master in Computer science, "STATE IT Head in 1962 Haryana Govt", Avoid Gotra: Lather, Bhyan, Kajal, Cont.: 9812620236
- SM4 Jat Boy 5'9"/14.07.1994, B.Tech(Mechanical Engineering), Senior Engineer in Reputed MNC, Avoid Gotra: Kundu, Malik, Poonia, Cont.: 8306832107
- SM4 Jat Boy 5'9"/25.10.1978, PhD Education, Asst Prof, Sirsa, Avoid Gotra: Balyan, Maan, Antil, Cont.: 7015722472
- SM4 Jat Boy 5'.8"/29.04.1988, BAMS Own Ayurvedic Clinic, income- 40k + Monthly Rent Income:-60K, Father (SR.JE BRO) *Agriculture land 8.5 acre.*Urben property in rohtak and Jind. Avoid Gotra: Redhu, Sangwan, Dhanda. Cont.: 9729557906, 8082470460.
- SM4 Jat Boy 6'3"/04.11.1991, B.Tech (Electronics & Communication Engineering), MBA, Profession: Senior Manager, CSC e-Governance Services India Limited, Annual Income: 13 Lakh, Divorcee (Short marriage), Single child, Father (Retired SDO, Haryana Government)Avoid Gotra: Malik, Dhankar, Dahiya. Cont.: 9811070013

POSTER MAKING COMPETITION ON 21.11.2025

FOR SCHOOL GOING STUDENTS.

A Poster Making Competition will be organized by Jat Sabha Chandigarh/Panchkula for school going students on 21st November, 2025 from 10 to 11 AM in the premises of JAT BHAWAN, 2-B, Sector 27-A, Madhya Marg, Chandigarh-160019.

The aim of this Competition is to generate creative spirit among the children and polish the existing potential among them. To widen the scope of talent search in this field and to give incentive to the deserving children, it has been decided to classify all the students into three categories as under:-

Category A	**Class III to V**
Category B	**Class VI to VIII**
Category C	**Class IX to XII**

For each category there will be prizes of Rs. 2100/-, Rs. 1500/-, Rs. 1100/- for First, Second and Third position respectively and two consolation prizes of Rs. 500/- will be given to each participating school. The topic of the Poster Competition will be **"Our Green Tomorrow"** or, **"Sports and India"** or **"City Beautiful Chandigarh"** for 3rd to 8th Standard. **"Responsible Use of Social Media"** or **"Environment Conservation & Innovation"** or **"India@2047-Vision for the Future"** for 9th to 12th Standard. Duration of the Competition will of one hour.

The entries for the Competition may be sent to JAT BHAWAN, 2-B, SECTOR 27-A. CHANDIGARH-160019 by post, on E. mail: jat_sabha@yahoo.com or personally by 19th November, 2025 up to 5 P.M.

Terms & Conditions of the Competition are as under :-

1. The participants must bring their identity cards or the identity slips along with attested photograph issued by the Head of the Institution/School for eligibility in the Contest.
2. The participants should bring their own drawing material and cardboard. Only drawing sheets will be given by the Competition Organizers.
3. The judgment of the Chairman of the Competition Committee will be final and binding on all.
4. The result of the Competition will be announced on the same day and prize winners will be honoured with cash awards and merit certificates on the occasion of Basant Panchmi Function on 23rd January, 2026.

Further enquiries may be made on Telephone Nos. 0172-5086180 or personally from the Jat Sabha Office, at JAT BHAWAN, 2-B, Sector 27-A, Madhya Marg, Chandigarh.-160019.

जाट सभा के वरिष्ठ उप प्रधान व पूर्व प्रधान वन संरक्षक हरियाणा, श्री प्रेम सिंह मलिक नहीं रहे।

जाट सभा चण्डीगढ़ व पंचकुला के वरिष्ठ उप प्रधान व हरियाणा के पूर्व प्रधान वन संरक्षक श्री प्रेम सिंह मलिक, भा०व०से०(सेवानिवृत्त) का 89 वर्ष की आयु में लम्बी अस्वस्थता व बीमारी के बाद 22 अक्तूबर 2025 को देहावसान हो गया। मलिक साहब दंबग, ईमानदार छवि के सघर्षशील अधिकारी थे जिन्होने अपनी सेवा अवधि के दौरान नैतिक मूल्यो, श्रृद्धा व निश्पक्षता को कायम रखा। वे वन विभाग हरियाणा के सर्वोच्च पद– मुख्य वन सरंक्षक से सेवानिवृत्त होने के पश्चात् यथावत् समाज कल्याण व जन सेवा के कार्यों में संलिप्त रहे तथा जाट सभा द्वारा चलाई जा रही विभिन्न सामाजिक, कल्याणकारी गतिविधियों में तहदिल से सहयोग व आर्थिक सहायता प्रदान करते रहे।

जाट सभा की कार्यकारिणी द्वारा शोक प्रस्ताव पास करके दिवगंत आत्मा को प्रभुचरणों मे स्थान देने व शोक सत्पंत परिवार के सदस्यों को इस असहनीय आघात को सहन करने हेतु परमपिता परमेश्वर से अरदास की गई।

हार जाना शर्म की बात नहीं, हार मान लेना शर्म की बात है।

आर्थिक अनुदान की अपील

आवासीय परिसर

जैसा कि आपको विदित है कि जाट सभा चण्डीगढ़ द्वारा गांव नोमैई, ग्राम पंचायत कोटली बाजालान, कटरा–जम्मु में 10 कनाल भूस्थल पर दीनबंधु चौ० छोटूराम यात्री निवास के नाम से एक विशाल बहुमंजलीय भवन का निर्माण किया जायेगा। यात्री निवास के निर्माण, विस्तार व रख–रखाव आदि पर वर्ष 2019 से अब तक लगभग 2,36,52000 (दो करोड़ छतीस लाख बावन हजार) रुपये की राशि खर्च हो चुकी है और लगभग 63,50,000 (तरेसठ लाख पचास हजार) रुपये अनुदान के तौर पर प्राप्त हुये। आप सब के सहयोग से यात्री निवास स्थल पर इस समय शौचालय व बाथरूम सहित पांच वातानुकुलित डबल बैड कमरों व 15 बैड की डोरमैट्री का निर्माण किया गया है। यात्रियों की सुविधा के लिये भोजन की व्यवस्था हेतू कैन्टीन का निर्माण कर दिया गया है। इसके अलावा बिजली, पानी की उचित व्यवस्था के लिये 11 के.वी. ट्रास्फॉर्मर व सबमर्सिबल ट्यूबवेल लगा दिया गया।

इस प्रस्तावित यात्री भवन के निर्माण में कुछ स्थानीय प्रशासनिक व भूगोलिक तकनीकी दिक्कते आ रही है। इसलिये बुहमंजलीय भवन का निर्माण कार्य प्रशासन की स्वीकृति मिलते ही शुरू कर दिया जायेगा और हमें पूर्ण विश्वास है कि आप सभी के सहयोग व माता वैष्णों देवी की कृपा से इस विशाल प्रोजेक्ट का निर्माण अवश्य पूरा होगा।

अतः आप सभी से नम्र निवेदन है कि इस कल्याणकारी व पुनित सामाजिक कार्य के लिए स्वेच्छा अनुसार अनुदान देने की कृपा करें। यदि कोई दानी सज्जन यात्री निवास में कमरे के निर्माण हेतु 5 लाख रूपये या इससे अधिक की राशि दान देता है तो उसका नाम भवन परिसर में उचित स्थान पर अंकित किया जाएगा। यात्री निवास भवन के लिए अनुदान देने वाले सज्जनों का उचित विवरण रखा जाएगा और उनका नाम सभा द्वारा प्रकाशित मासिक पत्रिका 'जाट लहर' में भी प्रकाशित किया जाएगा। इसके अलावा भवन निर्माण हेतू 11,000 रुपये या अधिक राशि देने वाले सभी दानी सज्जनों का अनुदान बोर्ड यात्री निवास परिसर में शीघ्र लगाया जा रहा है। भवन निर्माण की अनुदान राशि चैक, डिमांड ड्राफ्ट द्वारा 'जाट सभा चंडीगढ़' के पक्ष में जाट भवन 2–बी, सैक्टर 27–ए, मध्य मार्ग, चंडीगढ़ में भेजी जा सकती है अथवा आर.टी.जी.एस की मार्फत सीधे जाट सभा के बचत खाता नंबर 50100023714552, आईएफएससी कोड– एचडीएफसी 0001324 में ट्रांसफर की जा सकती है। अनुदान की राशि आयकर अधिनियम की धारा 80–जी के तहत आयकर से मुक्त है।

निवेदक : कार्यकारिणी जाट सभा चंडीगढ़/पंचकुला,
चौधरी छोटू राम सेवा सदन, कटरा, जम्मू

सम्पादक मंडल

सरंक्षक एवं सम्पादक : डा. एम.एस. मलिक, आई.पी.एस. (सेवानिवृत)

सह–सम्पादक : डा॰ राजवन्तीमान

साज सज्जा एवं आमुख : श्री आर. के. मलिक

प्रकाशन समिति : श्री बी.एस. गिल, मो० : 9888004417
श्री जे.एस. ढिल्लो, मो० : 9416282798

वितरक : श्री प्रेम सिंह, कार्यालय सचिव, जाट भवन, चण्डीगढ़

जाट भवन 2–बी, सैक्टर 27–ए, चण्डीगढ़
फोन : **0172-5086180, M-9877149580**
Email: jat_sabha@yahoo.com; Website: www.jatsabha.org

सर छोटूराम जाट भवन, सैक्टर–6, पंचकूला
फोन : 0172–2590870,M-9467763337
Email: jatbhawan6pkl@gmail.com

चौधरी छोटू राम सेवा सदन, कटरा, जम्मू M-9320693332

Postal Registration No. CHD/0107/2024-2026

RNI No. CHABIL/2000/3469

मुद्रक प्रकाशन एवं सरंक्षक सम्पादक डा. एम. एस. मलिक ने जाट सभा, चंडीगढ़ के लिए एसोशियटिड प्रिन्टर्ज़, चंडीगढ़, फोन : 0172–2650168 से मुद्रित करवा कर जाट भवन, 2–बी, मध्यमार्ग, सैक्टर 27–ए, चंडीगढ़ से प्रकाशित किया।